

२०६६, फागुन - २

सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष १८, अङ्क २२

२०६६, फागुन १६-२९

पूर्णाङ्क ४२४



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२५०७४२, ४२६२३९७, ४२६२३९८, ४२६२८०१, ४२५८१२२ Ext.२६५१ (सम्पादन), २६५० (छापाखाना), २१०९ (विक्री)

फ्याक्स: ४२६२८७८, पो.व.नं. २०४३८

Email: infor@supremecourt.gov.np, Web: www.supremecourt.gov.np

सम्पादक समिति

| | |
|--|-----------|
| माननीय न्यायाधीश श्री प्रकाश वस्ती | - अध्यक्ष |
| सहरजिष्टार श्री विपुल न्यौपाने | - सदस्य |
| सम्पादक श्री तेजेन्द्रप्रसाद शर्मा सापकोटा | - सचिव |

सम्पादक शाखाका कार्यरत कर्मचारीहरू

कम्प्युटर अधिकृत श्री शम्भुप्रसाद आचार्य
मुद्रण अधिकृत श्री उत्सव कान्छा महर्जन
ना.सु. श्री कृष्णवहादुर गुरुङ
डि. श्री सरस्वती खड्का
कम्प्युटर अपरेटर श्री विदुषी रायमाफी
कार्यालय सहयोगी श्री कृष्णवहादुर श्रेष्ठ

२०६६ फागुन १६ देखि २९ सम्म विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त निर्णय / आदेशहरू

| | |
|---------------|----|
| पूर्ण इजलास | १ |
| संयुक्त इजलास | ४ |
| इजलास नं. १ | ३ |
| इजलास नं. २ | ३ |
| इजलास नं. ३ | २३ |
| इजलास नं. ४ | ३ |
| इजलास नं. ५ | १२ |
| इजलास नं. ७ | ३ |
| इजलास नं. ८ | १४ |
| इजलास नं. ९ | ४ |
| इजलास नं. १० | ७ |
| एकल इजलास | १ |
| जम्मा | ७८ |

यो समाचार बुलेटिन हो। निर्णय संक्षेपीकरण गर्दा इजलासले नै प्रयोग गरेका शब्द यहाँ नपरेका पनि हुन सक्दछन्। यहाँ उल्लिखित निर्णयहरूको नक्कल लिन सकिनेछ।

२०६६ साल फागुन १६ देखि २९ गतेसम्म मुद्दाको लगत फछ्यौट विवरण

| क्र.सं | बिषयगत मुद्दा | लगत | | | फछ्यौट संख्या | बाँकी | |
|--------|---------------|---------------------------|------------------|-------|---------------|-------|------|
| | | जित्तौवा री सरेकी | यस वर्ष परिकी | जम्मा | | | |
| 1= | पुनरावेदनपत्र | देवानी पुनरावेदन | ३६५२ | ७७० | ४४२२ | १२९३ | ३१२९ |
| 2= | | फौजदारी पुनरावेदन | २३६८ | ५१४ | २८८२ | ७८० | २१०२ |
| 3= | | देवानी पूर्ण इजलास | ६७ | ११ | ७८ | ६२ | १६ |
| 4= | | फौजदारी पूर्ण इजलास | ३६ | ६ | ४२ | ३४ | ८ |
| 5= | रिट निवेदन | वन्दीप्रत्यक्षीकरण | ३ | ४२ | ४५ | ४२ | ३ |
| 6= | | साधारण रिट | २६०१ | ८२३ | ३४२४ | ९३८ | २४८६ |
| 7= | | पूर्ण रिट | १० | ३ | १३ | ६ | ७ |
| 8= | | विशेष रिट | ६४ | ३६ | १०० | ४४ | ५६ |
| 9= | साधक | साधक | ८८ | ४८ | १३६ | ६४ | ७२ |
| 10= | दोहोरयाई पाऊँ | दोहोरयाई पाऊँ देवानी | १०९४ | ५८३ | १६७७ | ८२६ | ८५१ |
| 11= | | दोहोरयाई पाऊँ फौजदारी | ३६४ | २०३ | ५६७ | ३०६ | २६१ |
| 12= | पुनरावलोकन | पुनरावलोकनको निवेदन | ४५१ | ३०६ | ७५७ | १४० | ६१७ |
| 13= | अनुमति | पुनरावेदनको अनुमति निवेदन | १०५ | २३ | १२८ | २९ | ९९ |
| 14= | विविध | विविध | ७२ | १५ | ८७ | २४ | ६३ |
| 15= | निवेदन | निवेदन | १० | १८२ | १९२ | १३३ | ५९ |
| 16= | प्रतिवेदन | प्रतिवेदन | ३६५२ | ११४ | १२८ | ७९ | ४९ |
| | | जम्मा | १०९९९ | ३६७९ | १४६७८ | ४८०० | ९८७८ |

२०६६ साल फागुन १६ देखि २९ गतेसम्मको मुद्दातर्फको संख्यात्मक विवरण

| | | | |
|--|------|--------------------|-----|
| (क) कार्यदिन | १० | (ड) आदेश संख्या | २३२ |
| (ख) पेशी चढेका मुद्दा संख्या | १६२१ | (च) फछ्यौट संख्या | २५९ |
| (ग) कानून व्यवसायीद्वारा स्थगित भएका मुद्दा संख्या | ३७७ | (छ) हेर्न नभ्याएका | ५७९ |
| (घ) हेर्न नमिल्ले मुद्दा संख्या | १७३ | (ज) नि.सु. संख्या | १ |

समूहकृत (अभियान) मुद्दाहरूको २०६६ फागुन २९ गतेसम्मको स्थिति

| समूह | कूल मुद्दा | फैसला | | | हेर्दाहेर्दै | नि.सु. | मेलमिलापमा गएको | बाँकी |
|-------------|------------|------------------|-------------|-------|--------------|--------|-----------------|-------|
| | | अधिल्लो अवधिसम्म | यस अवधिसम्म | जम्मा | | | | |
| फौजदारी | ३६५ | १६० | १० | १७० | ३ | | १९५ | |
| देवानी | ११८० | ८१४ | २८ | ८४२ | ८ | १ | ३३८ | |
| रिट/वाणिज्य | ३३६ | २२१ | १९ | २४० | | १ | ९६ | |

उद्धरण: सअ बुलेटिन २०६... .. १ वा २ पूर्णाङ्क , पृष्ठ
(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०६६, फागुन- २, पूर्णाङ्क ४२४, पृष्ठ ११

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

नेपाल कानून पत्रिका तथा सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

अब ह

www

- यो वेभसाइट ख
तथा त्यसको त
गर्नुहोस् ।

- २०६६ साल वैशाखदेखिका यी पत्रिकामा समाविष्ट
निर्णयहरू पढन र अर्को निर्णय नभएसम्म निःशुल्क
डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।

नेपाल कानून आयोगको वेभसाइटमा संविधान समेत हालसम्म
२५० जति ऐनहरू र तीमध्ये १०० वटा जति ऐनको अंग्रेजी
अनुवाद निःशुल्क पढन र डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।

ठेगाना

www.lawcommission.gov.np

मूल्य
रु.१५।-

मुद्रकः सर्वोच्च अदालत, छपाखाना, रामशाहपथ,
काठमाडौं ।

विषयसूची

| क्र. सं. | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|----------------------|---|------------------------|
| विशेष इजलास | | १ |
| 1= | अच्युतप्रसाद खरेल वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत | उत्प्रेषण समेत |
| 2= | अच्युतप्रसाद खरेल वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत | उत्प्रेषण समेत |
| पूर्ण इजलास | | १-३ |
| 3= | सीयाराम महतो वि. पवित्रनारायण महतो | लेनदेन |
| 4= | गंगाबहादुर प्रधान वि. यमुनाबहादुर प्रधान | अंश चलन |
| संयुक्त इजलास | | ३- ४ |
| 5= | भुपेन्द्रप्रसाद पोखरेल वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश |
| 6= | कर्णबहादुर रसाइली वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय काभ्रेपलाञ्चोक समेत | परमादेश समेत |
| 7= | राजकुमार बस्ताकोटी वि. मधुराम लामिछाने समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश |
| 8= | कमलप्रसाद बास्कोटा समेत वि. जिल्ला जलस्रोत समिति जिल्ला विकास समितिको कार्यालय फिदिम समेत | उत्प्रेषण समेत |
| इजलास नं. १ | | ४-५ |
| 9= | थलेश पूर्वे वि. नेपाल सरकार | भ्रष्टाचार |
| इजलास नं. २ | | ५-१० |
| 10= | नरेन्द्र भट्टराई वि. कृष्णबहादुर कुँवर | परमादेश |
| 11= | जीतप्रसाद द्वा समेत वि. हिरामान श्रेष्ठ | लेनदेन |
| 12= | हेमबहादुर प्रधान वि. हिरामान श्रेष्ठ | लेनदेन |
| 13= | विशाल श्रेष्ठ वि. जयबहादुर | उत्प्रेषण |

| | | |
|--------------------|---|------------------------|
| | सुनुवार समेत | |
| 14= | सीतादेवी अधिकारी वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय समेत | उत्प्रेषण समेत |
| 15= | जितेन्द्र सिंह वि. बाँके जिल्ला अदालत नेपालगञ्ज समेत | उत्प्रेषण परमादेश |
| 16= | भुवनेश्वरालाल चौधरी समेत वि. चुनचुनलाल देव | जग्गा खिचोला |
| 17= | किस्नराज रेग्मी वि. दुर्गाकुमारी बस्नेत | घर उठाई जग्गा खिचोला |
| 18= | सत्यनारायण मानन्धर वि. ज्ञानमाया मानन्धर समेत | अंश चलन |
| 19= | जयलक्ष्मी मास्के समेत वि. ऋषिबहादुर भण्डारी समेत, ऋषिबहादुर भण्डारी समेत वि. विजयध्वज मास्के समेत | वाटो कायम |
| 20= | दुर्गाबहादुर लामा वि. नेपाल सरकार | नकवजनी चोरी |
| 21= | जगदिश चौधरी वि. कमली देवी खोटा चलन, धर्मेन्द्र साह वि. नेपाल सरकार | क्षेत्रफल सच्याई पाऊँ |
| 22= | दिलीपकुमार भट्ट वि. लम्बोदर मुनकर्मि | लगत कट्टा निर्णय बदर |
| 23= | राजेन्द्रकुमार डाँगी वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय भद्रपुर समेत | उत्प्रेषण परमादेश |
| इजलास नं. ३ | | १०-२० |
| 24= | नेपाल सरकार वि. सवारीलाल चौधरी | कर्तव्य ज्यान |
| 25= | उर्मिला जोन्डे वि. मृगेन्द्र जोन्डे | अंशदर्ता |
| 26= | नेपाल सरकार वि. महमद अली मिया | कर्तव्य ज्यान |
| 27= | सोमराज सापकोटा वि. नेपाल विद्युत प्राधिकरण के.का. समेत | उत्प्रेषण परमादेश समेत |
| 28= | कान्छीमाया च्चामू श्रेष्ठ वि. भूमिसुधार कार्यालय भक्तपुर समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश |
| 29= | प्रतिशेष, नगेन्द्रभगत श्रेष्ठ वि. भुवानीप्रसाद रोइला समेत | उत्प्रेषण परमादेश |
| 30= | सुरेन्द्रकुमार थापा मगर वि. | उत्प्रेषणयुक्त |

| | | | | | |
|-----|---|------------------------|--------------------|---|-----------------------------|
| | घरेलु तथा साना उद्योग विकास समिति मुख्य शाखा कार्यालय त्रिपुरेश्वर समेत | परमादेश | | | |
| 31= | सुरेन्द्रकुमार थापा मगर वि. घरेलु तथा साना उद्योग विकास समिति मुख्य शाखा कार्यालय समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | 44= | अनादिराज खनाल समेत वि. नेपाल टेलिकम समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश |
| 32= | जगदिश शर्मा चुडाल वि. आन्तरिक राजश्व कार्यालय धरान | आयकर | 45= | हीराशोभा तुलाधर वि. कमलकाजी बानिया समेत | उत्प्रेषण परमादेश |
| 33= | मेघराज सुवेदी वि. पदपूर्ति समिति घरेलु तथा साना उद्योग विकास समिति प्रधान कार्यालय समेत | उत्प्रेषण परमादेश | 46= | भुवनराज भट्ट वि. सूचना तथा सञ्चार मन्त्रालय समेत | उत्प्रेषण परमादेश |
| 34= | सुनील शम्सेर थापा वि. भैरव शम्सेर थापा समेत | जालसाजी | 47= | नेपाल सरकार वि. कृष्णराज पन्त समेत | ठगी |
| 35= | सुरेन्द्रकुमार थापा मगर वि. घरेलु तथा साना उद्योग विकास समिति प्रधान कार्यालय समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | 48= | विक्रमहादुर बाडे वि. गणेशबहादुर खत्री समेत | उत्प्रेषण |
| 36= | शिवबहादुर बस्नेत वि. ऋण असूली पुनरावेदन न्यायाधिकरण समेत | उत्प्रेषण परमादेश समेत | 49= | जमुना कडायत वि. भूमिसुधार कार्यालय वर्दिया समेत | उत्प्रेषण समेत |
| 37= | नारायणप्रसाद अधिकारी वि. शिक्षा मन्त्रालय केशरमहल समेत | उत्प्रेषण | 50= | रतिशचन्द्रलाल सुमन वि. नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण के.का. समेत | उत्प्रेषण |
| 38= | रामकिशोर सिंह भूमिहार वि. खेहरू मण्डल धानुक समेत | निषेधाज्ञा | 51= | आन्तरिक राजश्व कार्यालय विराटनगर वि. पूजा इन्टरनेशनल विराटनगर | आयकर |
| 39= | मनोज सिंह समेत वि. शैलकुमारी देवी | निषेधाज्ञा | 52= | रत्नकुमारी थापा वि. भूमिसुधार कार्यालय समेत | उत्प्रेषण |
| 40= | बिक्रमाया सैजु समेत वि. प्रिमियर फिनान्स कम्पनी मानभवन समेत | निषेधाज्ञा | 53= | रत्नकुमारी थापा वि. भूमिसुधार कार्यालय समेत | उत्प्रेषण समेत |
| 41= | ज्योति पौडेल समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद् कार्यालय समेत | परमादेश समेत | इजलास नं. ४ | | २०-२१ |
| 42= | बाबुराम गिरी समेत वि. सम्माननीय प्रधानमन्त्री गिरिजाप्रसाद कोइराला समेत | परमादेश | 54= | वीरबहादुर तामाङ वि. नेपाल सरकार | कर्तव्य ज्यान |
| 43= | दिलबहादुर लामा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. | कर्तव्य ज्यान | 55= | भीमेन्द्रकुमार गोयल वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत समेत | वन्दीप्रत्यक्षीकरण |
| | | | 56= | रामकृष्ण साह तेली वि. विद्यानन्द साह तेली | घर खाली गराई पाऊँ |
| | | | 57= | ब्रजकिशोर यादव वि. लोकसेवा आयोगको कार्यालय समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत |
| | | | इजलास नं. ५ | | २१-२२ |
| | | | 58= | बिष्णुप्रसाद मैनाली वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत |
| | | | 59= | नेपाल सरकार वि. अजीज क्वारी | ठगी |
| | | | 60= | प्राणमती थरुनी वि. | अपुताली |

| | | | | | |
|-----|---|---------------------------|-----|--|-----------------------------|
| | नारायणप्रसाद थारू (चौधरी) समेत | | 76= | सौरभ राणा वि. प्रहरी प्रधान कार्यालय समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश |
| | इजलास नं. ६ | २२ | 77= | लक्ष्मीदेवी अधिकारी वि. पुनरावेदन अदालत नेपालगञ्ज समेत | उत्प्रेषण परमादेश |
| 61= | शिवबहादुर स्वॉर वि. नेपाल सरकार | भ्रष्टाचार | 78= | नेपाल सरकार वि. मीनबहादुर तामाङ | ज्यान मार्ने उद्योग |
| | इजलास नं. ७ | २३-३० | 79= | मनिफ क्वारी वि. बुधनीदेवी यादव समेत | जग्गा निखनाई पाऊँ |
| 62= | सतीशकुमार चौधरी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत | उत्प्रेषण | 80= | गेहेन्द्रचन्द्र ढुङ्गेल वि. प्रहरी प्रधान कार्यालय नक्साल समेत | उत्प्रेषण |
| 63= | हरिकृष्ण खत्री समेत वि. जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय काठमाडौँ समेत | उत्प्रेषणमिश्रित परमादेश | 81= | रामजी हमाल वि. शिक्षा मन्त्रालय विद्यालय शाखा समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश |
| 64= | कृष्णकुमार रायमाझी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत | उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश | 82= | यमुनादेवी चौधरी समेत वि. चन्द्रकान्त मण्डल समेत | उत्प्रेषण समेत |
| 65= | किशोरकुमार भ्ना समेत वि. जलस्रोत मन्त्रालय समेत | उत्प्रेषण | 83= | सीताराम पराजुली वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद् कार्यालय समेत | क्षतिपूर्ति दिलाई भराइ पाऊँ |
| 66= | नेपाल सरकार वि. रामगोपाल अहिर समेत | रहजनी चोरी र ज.क. | | इजलास नं. ८ | ३० |
| 67= | नागेन्द्र चौधरी वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | 84= | हरेन्द्र राउत अहिर समेत वि. हिरमतिआ अहिर्नी समेत | अंश दर्ता |
| 68= | प्रमोदकुमार महतो वि. हरिप्रसाद भट्टराई समेत | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | 85= | मनीराम कुर्मी वि. मौजेलाल कुर्मी | खिचोला |
| 69= | चूडामणि सुवेदी वि. शिक्षक सेवा आयोग समेत | उत्प्रेषण समेत | | इजलास नं. ९ | ३०-३३ |
| 70= | विष्णु जैसी वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत | उत्प्रेषण | 86= | रंगीलाल कुर्मी, वि. शत्रुघनप्रसाद कुर्मी | चलन चलाई पाऊँ |
| 71= | मिहिरकुमार ठाकुर वि. पुनरावेदन अदालत पाटन समेत | उत्प्रेषण | 87= | शितलप्रसाद बरै समेत वि. गौरीशंकर प्रसाद समेत | अंश दर्ता |
| 72= | निर्मला रानाभाट वि. स्वास्थ्य सेवा विभाग टेकु समेत | उत्प्रेषण समेत | 88= | मधुसुदन पुरी वि. नेपाल सरकार | भ्रष्टाचार |
| 73= | रेशमलाल लामिछाने वि. स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय समेत | उत्प्रेषण समेत | 89= | नेपालगञ्ज भन्सार कार्यालय वि. नरेश दुगाढ | निषेधाज्ञायुक्त परमादेश |
| 74= | वैकुण्ठबहादुर जि.सी. वि. स्वास्थ्य सेवा विभाग टेकु समेत | उत्प्रेषण | 90= | चुलाही महतो वि. सजनलाल महतो, तेतर महतो समेत वि. सजनलाल महतो | कुटपीट |
| 75= | कुलनारायण श्रेष्ठ वि. स्वास्थ्य सेवा विभाग टेकु समेत | उत्प्रेषण समेत | 91= | तेजनारायणप्रसाद रौनियार वि. नारायणप्रसाद ढुंगेल समेत | लिखत दर्ता बदर |
| | | | 92= | कुशेश्वर गुमैता वि. नेपाल सरकार | ज्यान मार्ने उद्योग |
| | | | 93= | राम आशिष ठाकुर लोहार वि. | उत्प्रेषण |

| | | | | | |
|-----|---|-------------------------|------|---|--------------------|
| | भूमिसुधार कार्यालय रौतहट समेत | मिश्रित परमादेश | 102= | आन्तरिक राजश्व विभाग वि. विजयकुमार भिण्डा | मूल्य अभिवृद्धि कर |
| | इजलास नं. १० | ३३-३६ | 103= | विजयकुमार दुगड वि. श्रम तथा यातायात व्यवस्था मन्त्रालय समेत | उत्प्रेषण परमादेश |
| 94= | जमुनाबहादुर श्रेष्ठ वि. सीतादेवी ढकाल समेत | निषेधाज्ञायुक्त परमादेश | | एकल इजलास | ३६-३७ |
| 95= | रामकिसुन मण्डल वि. नारायणबहादुर खैरगोली | वाली मोही निष्काशन | 104= | मोहन लोहनी समेत प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | परमादेश |
| 96= | राजेन्द्रकुमार नेपाल वि. गणेशबहादुर पाण्डे | गुठी कायम | | | |
| 97= | पुनमाया महर्जन समेत वि. गुठी संस्थान केका. समेत | निर्णय दर्ता बदर | | | |

भूल सुधार

सर्वोच्च अदालत बुलेटिन २०६६, अङ्क २०, (माघ १६ - २९) पूर्णाङ्क ४२२ को इजलास नं. ३ को क्रमसंख्या ५, पृष्ठ ९ मा मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय हुनुपर्नेमा अन्यथा भएकाले भूल सुधार गरिएको छ ।

- सम्पादक

| | | |
|------|--|------------------------|
| 98= | पुनमाया महर्जन समेत वि. तीर्थमान महर्जन समेत | बकसपत्र बदर दर्ता कायम |
| 99= | जगदिश सिंह क्षेत्री वि. हिरासिंह क्षेत्री समेत | अंश नामसारी |
| 100= | रामदेवीदेवी जैसवार समेत वि. नारायण राउत जैसवार | अंशवण्डा |
| 101= | नेपाल सरकार वि. दिनेश राय यादव समेत | कर्तव्य ज्यान |

पूर्ण इजलास

मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ, मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री अबधेशकुमार यादव, पुनरावलोकन निस्सा नं. ०६६-NF- ०००५, अंश, लक्ष्मणराज पाण्डे वि. ज्वालाराज पाण्डे

न्याय प्रशासन ऐन, २४८ को दफा ९ ले सर्वोच्च अदालतको पुनरावेदकीय अधिकारक्षेत्रका सम्बन्धमा व्यवस्था गरेको र त्यसअन्तर्गत शुरु अदालतले गरेको निर्णय उपर पुनरावेदन अदालतले पुनरावेदन सुनी सो निर्णय केही वा पूरै उल्टी गरेको अवस्थामा मात्र सर्वोच्च अदालतमा पुनरावेदन लाग्ने भन्ने समेतको व्यवस्था गरिएको हुँदा अरु किसिमबाट भएको पुनरावेदन अदालतको फैसलाउपर सर्वोच्च अदालतमा पुनरावेदन नै लाग्न नसक्ने भन्ने उक्त ऐनको मनसाय रहेको पाइने ।

शुरु अदालतले वादी दावीबमोजिम अंश छुट्टयाई लिन पाउने भनी गरेको फैसलाउपर यी प्रतिवादीले पुनरावेदन अदालतमा पुनरावेदन दायर गरेकोमा सो अदालतबाट म्यादविहीन भन्ने आधारमा पुनरावेदन खारेज गर्ने गरी फैसला गरेको देखिन्छ । त्यसरी पुनरावेदन अदालतबाट पुनरावेदन नै खारेज गरेको अवस्थामा त्यसले शुरु फैसलालाई कुनै अन्यथा प्रभाव पारेको भन्ने देखिएन । शुरु फैसलाले निश्चित गरेबाहेक पुनरावेदन अदालतको फैसलाले यी निवेदक/प्रतिवादीको हक सिर्जना गरेको वा हकमा संकुचन ल्याएको अवस्था समेत छैन ।

शुरु फैसला यथावत् कायम रहने फैसलाको परिणामलाई दृष्टिगत गरेर नै पुनरावेदन अदालतले आफ्नो फैसलामा पुनरावेदकलाई पुनरावेदनको म्याद दिने गरी निर्देश गरेको वा पुनरावेदनको म्याद जारी नभएको अवस्थाले पनि सोही कुरालाई पुष्टि गर्दछ । शुरु फैसलालाई कुनै

असर नगर्ने गरी पुनरावेदन नै खारेज गरेको अवस्थामा दफा ९(१)(ग) ले निश्चित गरे जस्तो शुरु निर्णय केही वा आंशिक उल्टीको स्थिति नरहने हुँदा यी प्रतिवादीले फैसलाको नक्कल लिई सर्वोच्च अदालतमा प्रस्तुत गरेको पुनरावेदनलाई ग्रहण गरी न्याय निरूपण गर्न मिल्ने नदेखिने ।

म्याद तामेल भएको कुरालाई यस अदालतमा पुनरावेदन दिँदा मात्र बेरितको म्यादको संज्ञा दिइएको छ । पुनरावेदन अदालतमा दिइएको पुनरावेदनपत्रमा सोसम्बन्धी कुनै पनि सन्दर्भ उल्लेख गरेको पाइँदैन । त्यसरी म्याद तामेल भएपछि त्यस्तो म्यादलाई बेरितको संज्ञा दिने व्यक्तिले सो म्याद बदरका लागि कानूनी उपचारको खोजी गर्न सक्छ र यदि म्याद बेरितको देखियो भने अदालतले त्यसलाई बदर गर्न, पुनः पुनरावेदनको म्याद जारी गर्ने लगायतका उपचार पनि प्रदान गर्न बेरितको भन्ने संज्ञा दिएपनि त्यसलाई विधिवत् रूपमा बदर गराउनलाई प्रयास गर्न सकेको देखिँदैन । अझ जुन म्यादलाई बेरितको भन्ने संज्ञा दिइएको छ, सोही म्यादपछि प्रारम्भ हुने पुनरावेदन दिने अधिकारको उपयोग गर्दा सो म्यादका बारेमा पूरै अनभिज्ञता देखाई त्यसको रीत बेरितको प्रसंग नै उठाउन सकेको पाइँदैन । फैसलाको नक्कल सारी लिने क्रममा सोही फैसलासँगै रहेको पुनरावेदन म्यादका बारेमा जानकारी भएन भनी अनुमान गर्ने कुरा हुँदैन । फैसलाको नक्कल सारी पुनरावेदन पत्र दर्ता गर्दा सो म्याद बेरितको भै त्यसबाट आफैले फैसलाको जानकारी नै नपाएकोले सो बेरितको म्याद बदर गरी फैसला सारेको मितिलाई फैसलाको जानकारी पाएको मिति मानी पुनरावेदन दर्ता गरिपाऊँ भनी निवेदन गरेको भए उसै बखत सो म्यादको रीत बेरितको प्रश्नमा न्याय निरूपण हुन सक्ने अवस्था रहन्थ्यो । तर पुनरावेदन अदालतमा त्यस विषयमा

कुनै किसिमको जिकीर नै लिन नसकेको स्थितिमा यस अदालतबाट सो म्यादका विषयमा बोल्न नमिल्ने ।

एउटा आधिकारिक निकायबाट जारी गरिएको र तामेल भएको म्यादको सो तामेलीका सम्बन्धमा कानूनले निश्चित गरेको प्रक्रिया पूरा गरी बदर नगराएसम्म त्यस्तो म्यादको वैधानिक हैसियतमा प्रश्न उठाउन नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : उमेश कोइराला

कम्प्युटर : सीता गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल माघ २९ गते रोज ५ शुभम् ।

संयुक्त इजलास

१.

स.प्र.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६० सालको रिट नं. ३४४७, परमादेश, प्रकाशमणि शर्मा समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

मानवलगायतका प्राणीको जीवन अस्तित्वसँग अभिन्न रूपमा गाँसिएको प्राकृतिक उपहारको रूपमा उपलब्ध पानीको स्रोतको संरक्षण, व्यवस्थापन, नियमन एवं नियन्त्रित र दीगो उपभोगको लागि मानवजाति एवं समग्र राज्ययन्त्रको पर्याप्त ध्यान जानु अति आवश्यक हुन्छ । मानवजाति बाहेकका अन्य जीवजन्तु एवं प्राणीहरूले भू-सतहमा उपलब्ध पानीको स्रोतबाट जीवन सिञ्चित गर्ने हुँदा त्यसबाट पानीको स्रोतमाथि दीर्घकालीन खतरा उत्पन्न हुन सक्दैन । तर मानवजातिले भू-सतहका अतिरिक्त भूमिगत रूपमा रहेको पानीलाई समेत विभिन्न यन्त्र एवं उपकरणहरूको प्रयोग गरी दोहन एवं उपभोग गर्नसक्ने भएकोले मूलतः मानवीय क्रियाकलापबाट नै पानीको स्रोतहरूमाथि अनियन्त्रित एवं अव्यवस्थित दोहन गर्ने स्थिति पैदा भै वातावरणीय

एवं प्राकृतिक सन्तुलनमा खतरा उत्पन्न हुन गइरहेको पाइन्छ । यस्तो अवस्थामा पानी जस्तो अत्यावश्यक एवं संवेदनशील वस्तुको उपभोग गर्दा यसको प्राकृतिक स्रोतको उचित व्यवस्थापन, संरक्षण र नियमन गर्नु त्यत्तिकै आवश्यक हुन्छ । मानिसले खाने कामको लागि वा अन्य जुनसुकै प्रयोजनको लागि पानीको स्रोतहरूको दोहन वा उपभोग गर्दा पर्याप्त संवेदनशीलता देखाउन सकिएन भने पानीका उपलब्ध स्रोतहरू क्रमशः न्यून हुँदै गई भयावह स्थिति समेत उत्पन्न हुन सक्ने ।

विद्यमान कानूनमा भएको व्यवस्थालाई कडाईका साथ लागू गरी काठमाडौँ उपत्यकाको भूमिगत जलस्रोतको उपभोगको विषयमा नेपाल सरकार तथा सो मातहतका सम्बन्धित निकायहरू समेतले कुनै सार्थक प्रयास गरेको वा सोसम्बन्धी कुनै कार्ययोजना (Action Plan) तर्जुमा गरेको वा सो विषयमा आधिकारिक रूपमा अध्ययन अनुसन्धान गरी भूमिगत जलस्रोतको उपभोग वा दोहन गर्ने कार्यको अनुगमनसम्म पनि गर्ने गरेको भन्ने देखिन आएन । काठमाडौँ उपत्यकाभित्र बसोवास गर्ने सम्पूर्ण सर्वसाधारणलगायत असंख्य नागरिकको साभ्का चासो र सरोकारको रूपमा रहेको काठमाडौँ उपत्यकाको भूमिगत जलस्रोतको अनियमित र अनियन्त्रित दोहनबाट भूमिगत जलभण्डार रिक्तिन गई वातावरणीय असन्तुलन र मानवीय एवं भौतिक क्षति हुन पुग्ने र यसबाट अन्ततः आमनागरिकको जीवन एवं स्वच्छ र सन्तुलित वातावरणमा बाँच्न पाउने हकमा नै आघात पुग्नुजाने देखिएको हुँदा विपक्षी प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेतका नाउँमा परमादेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर : रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०६६ साल पुस १ गते रोज ४ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह, २०६३ सालको रिट नं. ०२३९, परमादेश समेत, *गोपालप्रसाद लामिछाने वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत*

आफ्नो कार्यबाट मरे मारेको होइन भनी जिकीर दिने सुरक्षा फौज तथा राज्य पक्षले आफ्नो नागरिक के कति कारणबाट कसरी मर्न गएको रहेछ सो बारेमा खोजी अनुसन्धान गरी अरुकै कर्तव्यबाट यदि मर्न गएको रहेछ भने मौकैमा आवश्यक रुपमा छानवीन गरी कारवाही गर्नेतर्फ पहल गर्नुपर्नेमा राज्यपक्षले सोतर्फ आफ्नो दायित्व समेत निर्वाह गरेको नदेखिएको अवस्थामा मृतक खेतप्रसाद लामिछानेको मृत्यु सुरक्षा फौजले गोली हानेको कारणबाट नभई अन्य कारणबाट भएको रहेछ भनी भन्न मिल्ने अवस्था देखिन आएन । राज्य पक्षले नै निशस्त्र रुपमा रहेका आफ्नो निर्दोष नागरिकलाई कानूनको न्यूनतम शर्तहरू समेतको पालना नगरी गोली हानी सामान्य नागरिकको निर्ममपूर्वक हत्या गरेको पाइएको उक्त कार्यलाई कानूनी रुपमा प्रयोग भए गरेको नभई गैरकानूनी र स्वेच्छाचारी रुपमा भए गरेको कार्य रहेछ भनी मान्नु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर : रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक ९ गते रोज २ शुभम् ।

- यस्तै प्रकृतिको २०६३ सालको रिट नं. ०२३८, परमादेश समेत, *काले तामाङ समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत* भएको मुद्दाको यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

३.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६३ सालको रिट नं.

०४८३, उत्प्रेषण परमादेश, *ज्योति बानिया समेत वि. संस्कृति पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालय समेत*

निजी विमान कम्पनीहरू स्थापित भै सञ्चालनमा आएपछि तथा नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण ऐन, २०५३ को दफा १८ मा “प्राधिकरणले वायु सेवा सञ्चालनमा व्यापारिक सिद्धान्त अनुशरण गर्नुपर्ने” व्यवस्था गरेको हुँदा भाडा निर्धारण नेपाल सरकारले आफ्नो इच्छा मात्रले पनि गर्नसक्ने देखिँदैन । व्यापारिक सिद्धान्तअनुसार लगानी, इन्धन खर्च, मर्मत खर्च, प्रशासनिक खर्च, मुनाफा र जोखिम तत्वलाई समेत ध्यानमा राखी मूल्य विश्लेषण गरी प्राधिकरणले सुझाव पेश गर्नुपर्ने देखिन्छ भने भाडा निर्धारण गर्दा व्यापारिक वायुसेवा कम्पनीहरू र उपभोक्ताको हकबीच सन्तुलन खोज्नुपर्ने देखिन आउँछ । यसरी व्यापारिक सिद्धान्तअनुसार चल्ने निजी कम्पनीहरूको हवाई भाडा सरकारले नीति नियम बनाई विशेषज्ञको संयन्त्र बनाई मूल्य विश्लेषण गरी भाडा निर्धारण गर्नुपर्छ भन्ने भनाई खुल्ला अर्थ व्यवस्थाको सिद्धान्तसँग समेत मेलखान सक्दैन । यस्तो अवस्थामा वायुसेवा सञ्चालक कम्पनी नियामक संस्था प्राधिकरण र सरकार बसी सन्तुलन र औचित्यताको आधारमा हवाई भाडामा इन्धन अतिरिक्त शुल्क (Fuel Surcharge) तय गर्ने गरेको प्रक्रियालाई अन्यथा हो भन्न सक्ने स्थिति देखिएन । हवाई इन्धनको मूल्य घटेको कारण हाल उक्त Surcharge हटाइएको भए तापनि भावी दिनमा यस्तो अवस्था आउन सक्दैन भन्न सकिँदैन । समस्या आएपछि सेवा सञ्चालन नै बन्द गर्नु वा उपयुक्त तौर तरिका अवलम्बन गरी सेवालालाई निरन्तरता दिने भनी एउटा विकल्प रोज्नु पर्ने ।

इन्धनमा भएको मूल्यवृद्धिका आधारमा पहिलेदेखि नै पटक-पटक Surchage लगाइने अभ्यास (Practice) गरेको समेतबाट हवाई नियमित रुपमा सञ्चालन गर्न र उपभोक्तालाई समेत मर्का नपर्ने गरी सरकारले नियामक संस्था नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण र वायुसेवा सञ्चालन कम्पनीहरूको प्रतिनिधि संस्था वायुसेवा सञ्चालन संघलाई राखी तत्कालको समस्या समाधान गर्न छलफलद्वारा Surchage लगाउन अनुमति दिएको निर्णय र सोको कार्यान्वयन कानून न्याय र विवेकसम्मत नै देखिएको र उपभोक्ता स्वयंबाट आवाज नउठेको स्थितिमा निजहरूबाट उठाएको थप अतिरिक्त शुल्क फिर्ता दिनुपर्ने भन्ने मागसँग समेत सहमत हुन नसकिने ।
इजलास अधिकृत : लिलाराज अधिकारी
कम्प्युटर : रामशरण तिमिल्सिना
इति संवत् २०६६ साल पुस २२ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. १

१.

मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६० सालको फौ.पु.नं. ३१५४, लुटपीट, देवशरण पण्डित वि. बौएलाल साह वैश्य समेत

२००४ सालमा मिन्हीलगायत दर्ता भएको बौएलाल पोखरीको चार किल्ला र हाल कि.नं. २५७ मा नापी भएको गाउँ ब्लक जनिएको जग्गाको चार किल्ला मिल्न भिड्न आएको तथ्यलाई प्रतिवादीले अन्यथा भन्न सकेको समेत देखिदैन ।

मिन्ही दर्ता हुनु भनेको उक्त जग्गाको पोत तिर्नबाट र स्वामित्वबाट वञ्चित भई जग्गा धनीको हैसियत र दायित्वबाट छुटकारा पाउनु हो । त्यसरी पोत नतिर्ने जग्गालाई निजी वा व्यक्ति विशेषको जग्गा हो भन्न मिल्दैन, ती जग्गा सार्वजनिक रुपमा रहेको हो भन्ने बुझ्नु पर्ने हुन्छ ।

मालपोत नतिरी पोत मिन्हा भएको र त्यस्तो पोखरी धार्मिक सद्भावले सबैको सार्वजनिक प्रयोगका लागि समाजमा समर्पण गरेको मान्नुपर्ने ।
इजलास अधिकृत : कमलराज विष्ट
कम्प्युटर : वेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल असोज २६ गते रोज २ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६२ सालको दे.पु.नं. ८७७१, अंश अपुताली, कुलानन्द चौधरी समेत वि. लगनीदेवी थरुनी समेत

अंशबण्डाको महलको २०५८ सालमा भएको एघारौं संशोधनपछि ऐ. को ५ नं. ले अंश नहुँदा लग्ने वा बाबु मरेमा निजले पाउने अंश स्वास्नी वा छोराछोरीले पाउने व्यवस्था भएबाट २०५८ साल अघि छोरीले अंश पाउने व्यवस्था रहेको समेत देखिन नआउने ।

इजलास अधिकृत : कमलराज विष्ट
कम्प्युटर : वेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल असोज २६ गते रोज २ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०५८ सालको फौ.पु.नं. २९०२, जालसाजी, लगनीदेवी चौधरी थरुनी समेत वि. कुलानन्द चौधरी थारु समेत

गा.वि.स को कार्यालयबाट जारी गरेको मृत्यु दर्ताको प्रमाणपत्र सरकारी कार्यालयमा रहेका कागज हो होइन भनी हेर्दा जन्म, मृत्यु तथा व्यक्तिगत घटना दर्ता गर्ने ऐन, २०३३ को दफा ३ ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी नेपाल सरकारले गा.वि.स. सचिवलाई स्थानीय पंजिकाधिकारी तोकेको र त्यसरी उक्त ऐनले दिएको अधिकार प्रयोग गरी गा.वि.स. सचिवबाट हुने काम र कागजहरू सरकारी कामकाज हुने भएबाट मृत्यु दर्ताको प्रमाणपत्रमा पनि सरकारी छाप लागेको देखिँदा त्यस्तो कागजलाई सरकारी कागज नै मान्नु पर्ने ।

सरकारी कागज बाहेकमा कीर्ते जालसाजीमा मुद्दा दायर गर्न कीर्ते कागजको १८

नं. ले निर्धारित काम भए गरेको २ वर्षको निर्दिष्ट हदम्याद प्रस्तुत मुद्दामा आकर्षित नहुने ।
इजलास अधिकृत : कमलराज विष्ट
कम्प्युटर : वेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल असोज २६ गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं. २.

१.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६६ सालको रिट नं. ००३८, बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिपाउँ, हृदयजंग शाही समेत वि. राजस्व अनुसन्धान विभाग समेत

राजश्व चुहावट (अनुसन्धान तथा नियन्त्रण) ऐन, २०५२ को दफा ११(१) (ग) ले अनुसन्धान अधिकृतलाई मुद्दा अनुसन्धान तथा तहकिकात गर्दा अधियुक्तलाई तारेखमा राख्ने धरौटी वा जमानी लिई छाड्ने वा धरौटी राख्न वा जमानी दिन नसकेमा थुनामा राख्ने बारे प्रचलित कानूनबमोजिम मुद्दा हेर्ने अधिकारीलाई भए सरहको अधिकार हुने व्यवस्था गरेको र सोही ऐनको प्रयोग गरी निजहरूबाट धरौट माग गरेको देखियो । निवेदकहरूलाई मिति २०६६।९।१२ मा राजश्व चुहावटको अभियोगमा राजश्व अनुसन्धान विभागबाट अनुसन्धानको सिलसिलामा थुनामा राखेको देखिए पनि हाल मिति २०६६।१०।२२ को आदेशानुसार माग भएको धरौट दाखिल गर्न नसकी थुनामा बसेको स्थिति भई निवेदकको पहिलाको र हालको थुनाको स्थितिमा नै परिवर्तन भएको समेत देखिन्छ ।

यसप्रकार अनुसन्धान अधिकारीलाई कानूनले दिएको अधिकार प्रयोग गरी निवेदकहरूबाट धरौट माग भएकोमा मागबमोजिमको धरौट दिन नसकी थुनामा बसेको अवस्थालाई निवेदन दावीबमोजिम गैरकानूनी थुना भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : कमलराज विष्ट
इति संवत् २०६६ साल माघ २७ गते रोज ४ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०५९ सालको दे.पु.नं. ९००१, माना चामल भराई पाऊँ, मेनका बस्नेत समेत वि. सुजन बस्नेत समेत, २०६० सालको दे.पु.नं. ९२५८, रञ्जु बस्नेत वि. कृष्णराज बस्नेत समेत

प्रतिवादीहरूले वादीलाई घरबाट निकाला गरी उनीहरूको भरणपोषणको दायित्वबाट विमुख हुन खोजेको स्वतः स्पष्ट हुन आएको अवस्थामा नावालक छोराको भरणपोषण तथा शिक्षा स्वास्थ्यको दायित्व समेत वादीमा नै सरेको देखिन्छ । यस अवस्थामा वादीहरूलाई भरणपोषणको निमित्त आर्थिक व्यवस्था गर्नुपर्ने जिम्मेवारी प्रतिवादीहरूको हुने नै हुँदा अंशवण्डाको १० नं. तथा माना चामलको ४ नं. बमोजिम वादीले अंश नपाएसम्म निजहरूको भरणपोषण, शिक्षादीक्षा तथा स्वास्थ्य उपचारको लागि आवश्यक रकम माना चामलको रुपमा अंशवण्डाको १० नं. तथा माना चामलको ४ नं. अनुरूप प्रतिवादीहरूले व्यवस्था गर्नुपर्ने । वण्डा नछुट्याएसम्म अंशबापतको सम्पत्ति वास्तविकरूपमा वादीहरूले उपभोग गर्न पाएको अवस्था नहुँदा पुनरावेदन अदालतको फैसला मितिसम्मको मात्र मानाचामल भराउनु तर्कसंगत एवं विवेकसम्मत हुने देखिन नआउने ।

इजलास अधिकृत : कृष्णप्रसाद सुवेदी
कम्प्युटर : वेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १५ गते रोज १ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६३ सालको रिट नं. ३३६५, उत्प्रेषण परमादेश समेत, नरोत्तम राना वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को सचिवालय समेत

प्राचीन रोमन साम्राज्यको कालदेखि नै विकसित हुँदै आएको सार्वजनिक न्यायको सिद्धान्तअनुरूप सबै जनताहरूको सम्पत्ति एवं नासोको रुपमा रहेका सडक, सरकारी घर,

नदीनाला, जंगल, ताल, पोखरी, कुवा, पानी, पधेरो, गौचर, चिहान, पाटीपौवा, खेल मैदान, पर्ति जग्गा जस्ता सबै जनताहरूले सहज पहुँच एवं उपभोग गर्न पाउने सम्पत्तिहरू सबैको साझा सम्पदा (Common Heritage of Mankind) को रूपमा लिनुपर्दछ । यी चीजवस्तुहरूलाई प्राकृतिक वरदानको रूपमा लिदै जुनसुकै प्रकारको हैसियत भएका भएपनि सबै नागरिकले समान रूपमा चलन गर्न प्रयोग गर्न पाउनु पर्दछ । यस्ता प्राकृतिक स्रोत सम्पदाको प्रभावकारी रूपमा व्यवस्थापन एवं संरक्षण गरी भावी पुस्ताको प्रयोगको लागि सुरक्षित राख्नु तथा दुरुपयोग भएमा वा गलत रूपमा प्रयोग भएमा त्यस विरुद्ध नागरिकहरूलाई प्रश्न उठाउने अधिकार प्रदान गर्नु पनि यही सिद्धान्तको अवधारणाले समेटेको देखिन्छ । यसै गरी Doctrine of Parens Patriae अन्तर्गत राज्यले उल्लिखित प्राकृतिक स्रोत साधनहरूको संरक्षकत्वको जिम्मेवारी लिनु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : कृष्णप्रसाद सुवेदी

कम्प्युटर : वेदना अधिकारी

इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम् ।

इजलास नं. ३

१.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६६ सालको साधक नं. ०६६ RC ०००७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. युवराज लामिछाने मगर

अदालतमा वयान गर्दा वारदातका दिन रक्सी खाई पैसा नतिरेको विषयमा मृतक र आफूबीच वादविवाद हुँदा मृतकले आफूलाई घाँटीमा समातेपश्चात् आत्मरक्षाको लागि हतियार प्रहार गरेको भनी मृतकलाई छुरी हानेकोमा सावित भै वयान गरेका छन् । निजको सो साविती वयान मुद्दा हेर्ने अधिकारीसमक्ष भएको साविती हो । मुद्दा हेर्ने अधिकारीसमक्षको सावितीलाई Guilty plea लिएको मानिन्छ र यस्तो वयानलाई असामान्य परिस्थिति र अवस्थामा बाहेक अन्य प्रमाणले

Corroborate गर्न पर्दैन । यसको अतिरिक्त प्रतिवादीसँग घटनामा मौजुद रहेका चन्द्रबहादुर केप्ल्याकी मगर, विष्णु पोर्तेल, रुद्र केप्ल्याकी मगरले मृतकले प्रतिवादीलाई घाँटीमा प्रहार गरेको भनी बकपत्र गरेको देखिँदैन यसबाट प्रतिवादीको आफू मृतकबाट Provocate भएको भन्न खोजेको जिकीर स्थापित हुन सक्दैन । तसर्थ मृतकबाट Provocation भएको वा आत्मरक्षाका निमित्त मृतकलाई प्रहार गरेको भन्ने प्रतिवादीको वयान भ्रूडा देखिन्छ । प्रतिवादीको अदालतसमक्षको कसूर स्वीकारेको वयानबाट मृतक र प्रतिवादीबाट अधिदेखि नै विवाहसम्बन्धी विषयमा वादविवाद भै रिसइवी रहेको तथ्य स्थापित भएको र घटनामा प्रत्यक्षरूपमा संलग्न रहने अन्य व्यक्तिहरूले नै मारेको भन्ने प्रमाणित हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायण रेग्मी

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ४ गते रोज ५ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६५ सालको साधक नं. ०६५ RC ००१५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. प्रकाश तामाङ्ग

प्रतिवादीले अदालतमा वयान गर्दा वारदातको दिन डेरीमा दुध पुऱ्याई घर आउँदा हजुरबुवाले पिट्न लागेकाले रिस थाम्न नसकी घरमा भएको बञ्चरोले हजुरबुवाको टाउकोको कन्चटमा ३ पटक जति हिर्काइ आफै प्रहारी कार्यालयमा गएको भनी आरोपित कसूरमा सावित नै रही वयान गरेको देखिन्छ । मृतकको पोष्टमार्टम रिपोर्टबाट टाउकोमा चोट लागि मृत्यु भएको भन्ने देखिँदा प्रतिवादीको साविती तथ्यगत रूपमा वस्तुपरक र यथार्थ रूपले प्रमाणित हुन आएको छ । जाहेरवाला दमैसिंह तामाङ्गले बकपत्र एवं मृतककी श्रीमती गीता तामाङ्ग, आमा माया तामाङ्गको मौकामा भएको कागज एवं बकपत्र तथा वस्तुस्थिति मुचुल्काका ठूलोकाजी तामाङ्ग समेतको कागज व्यहोराबाट पनि प्रतिवादीले मृतकलाई

टाउकोमा बच्चरोको पासोले प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको भन्ने कुरा सप्रमाण पुष्टि हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायण रेग्मी

कम्प्युटर : सुदीप पञ्जानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ४ गते रोज ५ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६६ सालको साधक नं. ०६६ RC ००१३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. डिकवहादुर कार्की

प्रतिवादी वारदातपश्चात् हालसम्म पनि फरार रहनुले प्रतिवादीले मृतकलाई कर्तव्य गरी मार्ने कार्य गरेको भन्ने थप प्रमाणित हुन आउँछ । मृतक र प्रतिवादीबीच वारदात हुनुभन्दा पहिले पनि वारम्बार भगडा भै रहने गरेको भन्ने बुझिएका मानिसहरूको बकपत्रबाट देखिएको वास्तविकता वारदातपश्चात् प्रतिवादी फरार रहनुको पछ्याडि लुकेको Hidden सत्यता तथा मृतकको घाँटीमा देखिएको धारिलो हतियारको चोटको मूल्याङ्कन गर्दा मृतकलाई प्रतिवादी डिकवहादुर कार्कीले मुलुकी ऐन ज्यानसम्बन्धीको १ नं. विपरीत कर्तव्य गरी मारी ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिमको अपराध जन्य कसूर गरेको प्रमाणित हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ४ गते रोज ५ शुभम् ।

४.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६३ सालको साधक नं. ०६३ RC ००९१, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. हर्षराज बज्राचार्य

मौकामा कागज गरी अदालतमा बकपत्र गर्ने रामरत्न शाक्य समेतको बकपत्रबाट प्रतिवादीको मृतकलाई मार्ने कार्यमा संलग्नताको पुष्टि भएको देखिन्छ । मिसिल संलग्न आधार प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी हर्षराज बज्राचार्यले मृतक रत्नबीर बज्राचार्यलाई हम्मर जस्तो घातक

हतियारले टाउको जस्तो मर्मस्थानमा प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको शंकारहित रूपमा वस्तुपरक ढंगले प्रमाणित हुन आएकोले निज प्रतिवादीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्म कैद हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ४ गते रोज ५ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६६ सालको साधक नं. ०६६ RC ०००६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. हिमाराई (भोटिया)

आफैले जन्माएको बच्चाप्रति स्नेहभाव र आफ्नो गर्भबाट पैदा भएको जीवित मानवको माया ममता र निजले संसार हेर्न पाउने, संसारिक जीवन व्यतीत गर्न पाउने निजको जीवनको अधिकार समेतको ख्याल र परबाह नगरी खाल्डोमा पुरी मार्न सहमत भएको प्रतिवादीको क्रियालाई अपराध नै मान्नुपर्ने ।

शारीरिक आवश्यकता पूर्ति गर्ने, गर्भधारण गर्ने र जातक बच्चा जन्माउने मानवीय गुण र प्रकृति भएपनि ती कुराहरूलाई समन्वयात्मक ढंगबाट सञ्चालन गर्नुपर्दछ । जन्मने वित्तिकै बच्चालाई मारिदिने हो भने यो संसारको सृष्टि चलन नसक्ने मात्रै हैन, संसार नै आपराधिक गतिविधिबाट मुक्त हुन नसक्ने ।

प्रतिवादीको कार्य मुलुकी ऐन ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. र १३(३) नं. अन्तर्गतको कसूरको परिभाषाभित्र पर्ने देखिँदा निजलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद हुने । आफ्नो पति घरमा नभएको अवस्थामा परपुरुषसँग अनैतिक शारीरिक सम्बन्ध राख्नुपर्ने प्रतिवादीको वाध्यता र परपुरुषले विभिन्न प्रलोभन एवं दवावमा यौन शोषण गर्नसक्ने यथार्थतालाई विचार गर्दागर्दै पनि आफ्नै गर्भबाट जन्मेको नवजात शिशुलाई बाँच्न पाउने निजको नैसर्गिक अधिकारबाट नै बञ्चित

गरेको प्रतिवादीको कार्यलाई अ.व. १८८ नं. बमोजिमको व्यवस्थाका आधारमा ३ वर्षमात्र कैद गर्नु उपयुक्त नहुने हुँदा निज प्रतिवादी हिमा राई (भोटिया) लाई १० वर्ष कैद हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : सुदिप पञ्जानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ४ गते रोज ५ शुभम् ।

६.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६६ सालको साधक नं. २०६६ RC ०००५, कर्तव्य ज्ञान, नेपाल सरकार वि. कमल शोर्पा समेत

मृतकले आफ्नो सासूलाई टुनामुना लगाइदिएको भन्ने ससुराको कथनमा विश्वास गरी जाहेरवालाकै घरमा भरिराखेको भरुवा बन्दुक लिई मृतकको घरमा गै ढोका खोल्न लगाई ढोका खोल्नासाथ गोली प्रहार गर्ने प्रतिवादीको कार्यलाई मनसायपूर्वक गरिएको हत्या मान्नुपर्ने ।

मनसायपूर्वक गोली प्रहार गरी मारौं भन्ने उद्देश्यसाथ गरिएको कार्यलाई अ.व. १८८ नं. बमोजिम १५ वर्षको सजाय गर्न राय व्यक्त गरेको फैसलालाई उक्त नं. मा भएको व्यवस्थाको उचित मूल्याङ्कन हुन नसकेको मान्नुपर्ने हुन्छ । अ.व. १८८ नं. मा भएको कानूनी व्यवस्थाको प्रयोग भावनामा बगेर गरिनु हुँदैन । त्यस व्यवस्थाको प्रयोग गर्ने उचित र पर्याप्त आधारबिना सजायमा कम गरिँदा न्यायप्रतिको जनताको धारणा नै नकारात्मक हुन जाने ।

इजलास अधिकृत : नारायण रेग्मी

कम्प्युटर : सुदीप पञ्जानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ४ गते रोज ५ शुभम् ।

७.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको फौ.वि.नं. ०६४-MS-००११, अदालतको अपहेलना, सरिता गिरी वि. श्यामसुन्दर गुप्ता समेत

अदालतको अपहेलना हुन अदालतबाट भएका फैसला वा आदेशको पालना नगर्ने वा

कार्यान्वयन गर्ने कुरामा अवरोध सिर्जना गर्ने वा अदालतको मानमर्यादा र गरिमामा आँच आउने कार्य गरेको अवस्थामा अदालतको अपहेलना गरेको मान्नुपर्ने ।

अदालतमा न्यायसम्पादन गर्ने सिलसिलामा भएका काम कारवाहीका विषयमा अनावश्यक लाञ्छना लगाउने र न्यायाधीशहरूले गरेका न्यायसम्पादनका कार्यका बारेमा अनावश्यक टिप्पणी गर्ने जस्ता कार्यहरू अदालतको अपहेलनाजन्य कार्यभित्र पर्दछन् ।

निर्णयमा अदालतका सहरजिष्टारको कार्यक्षमा निवेदन सनाखत गराउने कार्य भैरहेको बेला विपक्षीहरूबाट अनावश्यक दवाव सिर्जना गरेका र म्याद बुझाउन अवरोध खडा गरेको भन्ने पनि देखिन्छ । न्यायसम्पादन गर्ने स्वतन्त्र निकायमा कार्यरत कर्मचारीहरूको कार्यक्षमित्री त्यस किसिमको कार्य गर्ने भनी लिएको निवेदन दावीमा सत्यता प्रतीत हुँदैन । यसका अलावा कसलाई के कुन व्यहोराले म्याद बुझाउन दिन बाधा अवरोध गरेको हो सोको यकीन दावी लिएको पनि देखिँदैन भने अदालतमा म्याद बुझाउन सकिने कानूनी प्रावधान बाध्यात्मक नभई स्वैच्छिक भएको अवस्थामा त्यस कार्यलाई अदालतको अपहेलनाजन्य कार्यको परिभाषाभित्र पर्ने नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल भदौ २९ गते रोज २ शुभम् ।

८.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९७६६, निर्णय दर्ता वदर, सुलोचना तुलाधर वि. हेराकाजी महर्जन

साविक लगत नै नभएका वीर भद्रेश्वर वीर भगवती गुठीका नाममा जग्गाधनी र मोही आफूलाई देखाई प्रतिवादीले दिएको निवेदनका आधारमा विवादित जग्गा वीर भद्रेश्वर वीर भगवती कायम गर्ने गरी गुठी तहसील कार्यालय कालमोचनबाट भएको निर्णयलाई कानून र

न्यायको रोहमा उचित मान्न मिल्ने देखिंदैन ।
लगत नै नभएको गुठीको नामबाट लगत भिडी गै
सकेको भन्ने अर्थ गरी गुठीका नाममा दर्ता
गरिएको कार्यलाई कानूनअनुरूपको भन्न नमिल्ने ।

मुद्दा हेर्ने अधिकारीले बुझ्नु पर्ने प्रमाण
बुझी हेरी सो प्रमाणको समेत उचित मूल्याङ्कन
गरी मुद्दाको निर्णयमा पुगनुपर्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ८ गते रोज ५ शुभम् ।

९.

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री
अवधेशकुमार यादव, २०६१ सालको फौ.पु.नं.
३३८४, आयकर, दिनेशकुमार गोल्छा वि. आन्तरिक
राजश्व कार्यालय विराटनगर**

छुट्टयाएको कर रकम बैकमा छुट्टै खाता
खोली सञ्चालन गर्नुपर्नेमा उद्योगकै नाउँमा
खातामा जम्मा गरेको भन्ने देखिँदा त्यस्तो
रकमलाई औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ को
दफा १५(य) को प्रयोजनार्थ आयकर निर्धारणका
लागि छुट पाउने खर्चमा समावेश गर्न नमिल्ने हुँदा
सो रकम समेतलाई खुद आयमा समावेश गरी
भएको निर्णयलाई अन्यथा भन्न नसकिने ।

कर निर्धारणका आधारभूत सिद्धान्त र
ऐनमा भएका व्यवस्थालाई सामान्यस्यतामा राखी
कर निर्धारण गर्ने कानूनतः अधिकार प्राप्त
निकायबाट गरिएको कर निर्धारण आदेशलाई
कानून प्रतिकूलको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ८ गते रोज २ शुभम् ।

१०.

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री
अवधेशकुमार यादव, २०६३ सालको रिट नं. ३३१६,
उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, आशामाया शाक्य
समेत वि. तीर्थमाया महर्जन समेत**

विवादित जग्गा बाँडफाँड गर्दा दुवै पक्षको
मञ्जूरी भएमा बाहेक दुवै भागमा जग्गा पर्ने

जग्गाधनीलाई उक्त जग्गामा पुग्ने उपलब्ध बाटोको
सहज पहुँच र न्यायोचित लाभ हुने गरी बाँडफाँड
गरिएको अवस्थामा मात्र जग्गाको नरमकरम
मिलाई बाँडफाँड गरिएको मान्नुपर्ने हुन्छ । तर
भूमिसुधार कार्यालयको उक्त निर्णयमा त्यसरी दुवै
पक्षलाई न्यायोचित लाभ र सहज पहुँच हुने गरी
नरमकरम गरी बाँडफाँड भएको भन्न मिल्ने ।

इजलास अधिकृत : उपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २५ गते रोज ५
शुभम् ।

११.

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री
अवधेशकुमार यादव, २०६५ सालको रिट नं.
०६५-WH-००६३, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, तेजकान्त
भा समेत वि. श्यामसुन्दर गुप्ता समेत**

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुन
शरीर थानामा रहेको हुन आवश्यक हुन्छ । थुना
भन्नाले राज्यले खडा गरेको कारागारमा नै थुनामा
रहेको हुनुपर्ने आवश्यक नभई House Arrest
गरिएको वा कुनै यरिया छाड्न नपाउने गरी यरिया
Confine गरी राखेको वा थुनामा राख्ने अधिकार
नभएको व्यक्तिले कसैलाई थुनामा राखेकोमा वा
अधिकारप्राप्त अधिकारी बाहेक अरु सामान्य
नागरिकले कसैलाई थुनामा राखिएकोमा पनि
बन्दीप्रत्यक्षीकरणको उपचार प्राप्त हुने ।

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिटमा अदालतले
थुना गैरकानूनी हो होइन थुनाको Legality जाच्ने
मात्र होइन, थुनामा नराखेको भन्ने जिकीर
देखिएमा अदालतलाई विश्वास नलागेमा अदालतले
प्रमाण समेत बुझ्न सक्दछ । तर असाधारण
अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत बन्दीप्रत्यक्षीकरणबाहेक
कसैको मौलिक हक वा अन्य कानूनी हक कुनै
निकाय वा कुनै अधिकारीबाट हनन् भएको भनी
परेको अन्य प्रकारको निवेदनमा अदालत विवादमा
प्रवेश गरी प्रमाण बुझ्ने काम नगर्ने ।

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको उपचारअन्तर्गत
थुनाको Legality परीक्षण गर्दा Institution of

Proceedings को दिनको Legality होइन सुनुवाई गर्दाको अथवा Date of Return को दिनको Legality हेरिन्छ । यदि Date of Return मा पनि थुनाको LIllegality को निरन्तरता छ भने बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेशद्वारा बन्दी थुनामुक्त हुन्छ । तर यदि Date of Return अर्थात् सुनुवाई हुँदाको दिनमा LIllegality सच्चिइसकेको छ भने थुनामुक्त गर्न आदेश जारी नहुने ।

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट बन्दीलाई गैरकानूनी थुनाबाट मुक्त गरिने आदेश हो । बन्दी थुनामा नै नभएको अवस्थामा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल भदौ २९ गते रोज २ शुभम् ।

■ यसै लगाउको २०६५ सालको रिट नं. ०६५ WH ००६४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, *तेजकान्त भ्वा वि. सरिता गिरी समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

१२.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०६५-CI-००७४, मोही नामसारी, *सुरेन्द्रवहादुर खड्का वि. सुरज खड्का*

भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) को कानूनी व्यवस्थाअनुसार मोही हक प्राप्त हुन जग्गाधनीले पत्याउनु पर्ने व्यवस्था रहेको साथसाथै मोही नामसारीको दावी गर्नेको दर्तावाला मोहीसित सगोल वा विगोल के कस्तो अवस्था छ सो समेत विचार गर्नुपर्ने एवं जग्गाको जोत कसले कसले गरेको हो, वाली कसले बुझाएको हो सो समेत हेरी निर्णय गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृत : उपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २६ गते रोज ६ शुभम् ।

१३.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६४ सालको रिट नं. ०६४ WO ००८७,

उत्प्रेषण परमादेश, *पुरुषोत्तम अर्याल वि. गुल्मी जिल्ला अदालत समेत*

कानूनबमोजिम गठित कम्पनीहरूलाई विषयवस्तुको प्रकृति र अवस्थाअनुसार यस अदालतको असाधारण अधिकारक्षेत्रमा निवेदन गर्ने हक हुन्छ । संविधानको धारा १०७(२) को असाधारण अधिकारक्षेत्रमा Locus Standi केवल प्राकृतिक व्यक्तिलाई मात्र प्राप्त हुन्छ भन्न नमिल्ने ।

निक्षेपकर्ताले खाता खोलेपछि बैंकले निक्षेपकर्ताको लिखित अनुमति नभई उक्त रकम कसैलाई दिन सक्दैन । निक्षेपकर्ताको रकम बैंकको नियमको परिधिभित्र रही निक्षेपकर्ताको On Demand र निक्षेपकर्ताको Order वा Standing Instruction मा भुक्तानी दिन बैंक Legally Committed हुन्छ । निक्षेपकर्ता मरेको भन्ने कानूनी रूपमा प्रमाणित भएको अवस्थामा र बैंक तथा वित्तीय संस्थासम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ८१ को अवस्था र खाता खोल्दा निक्षेपकर्ताले कुनै व्यक्तिलाई इच्छाएको अवस्थामा बाहेक निक्षेपकर्ताको रकम बैंकले अरु व्यक्तिलाई भुक्तानी गर्न नसक्ने ।

निक्षेपकर्ताले खाता खोल्दा ऐनको दफा ८१(१) अनुसार कसैलाई नइच्छाएको हुँदा निक्षेपकर्ता नन्दरामको मृत्यु भएको भन्ने कानूनबमोजिम प्रमाणित नहुँदासम्म वा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ३२ को अवधिसम्म उक्त निक्षेपमा दावी गर्न विपक्षीहरूको हक पुग्दैन । मिलापत्रले प्रचलित कानूनलाई Override गर्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २२ गते रोज १ शुभम् ।

१४.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५ सालको स.फौ.पु.नं. ०६५-CR-०३३२, ०२६६, कर्तव्य ज्यान, *चीजकाजी परियार समेत वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. चीजकाजी परियार समेत*

भवितव्य हुनको लागि कसैले आफूले गरेको कर्तव्यबाट मानिस मर्लाजस्तो नदेखिएको कुनै कामचुरा गर्दा त्यसैद्वारा केही भै कुनै मानिस मर्न गएको भवितव्य ठहर्छ, भन्ने व्यवस्था ज्यानसम्बन्धी महलको ५ नं. ले गरेको देखिन्छ । प्रस्तुत घटनामा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाअनुरूपको अवस्था नभई दुवैजना प्रतिवादीहरूले मृतकलाई एकले समाउने र अर्काले टाउको लगायत शरीरका विभिन्न भागमा पटक-पटक प्रहार गरेको देखिँदा उक्त वारदातलाई भवितव्य भन्न नमिल्ने ।

ज्यान मार्नको मनशाय नभएको, लिक्छिपी प्रहार नगरेको र उसै मौकामा उठेको रिस थाम्न नसकी जोखिमी हतियारबाहेक साधारण लाठा, दुङ्गा, लात र मुक्का इत्यादिले हान्दा सोही चोट पीरले मरेमा १० वर्षमात्र कैद गर्नुपर्ने । ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. को व्यवस्थाअनुसार यी प्रतिवादीहरूले मृतकलाई मार्नुपर्ने सम्मको मनशाय तथा रिसइवी नरहेको र जोखिमी हतियारले हानेको तथा विष खुवाएको अवस्था नभै केटी खोज्नजाने विषयमा भगडा भै तत्काल उठेको रिसको कारणबाट प्रतिवादीहरूले मृतकलाई लाठा, दाउराले प्रहार गरेको कारण सोही चोट पीडाबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने पुष्ट भएको देखिँदा प्रस्तुत वारदात आवेश प्रेरित हत्या ठहर्ने ।

इजलास अधिकृत : उपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २५ गते रोज ४ शुभम् ।

१५.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६२ सालको दे.पु.नं. ९७४०, क्षतिपूर्ति भराई पाऊँ, सुरेन्द्रवहादुर न्हुच्छे प्रधान वि. नेपाल बंगलादेश बैंक लि.

शेयर जारी गर्ने सम्बन्धमा प्राप्त रकम लिने बैंकको विज्ञापन, कम्प्युटर, छपाई सरसल्लाह लगायत खर्च स्वाभाविक हुने खर्च हो । यसका साथै शेयर जारी गर्ने भनेको खुल्ला विज्ञापनद्वारा सबैलाई आह्वान गरी अटाएसम्मले खरीद गर्न

पाउने गरी जारी गरिन्छ । शेयरमा कारोबार गर्न, खरीद गर्न, शेयर धनी बन्न सबै इच्छुकले दर्खास्त हाल्दा Issue गरिने प्रस्तावित रकमभन्दा बढी रकममा बैंकमा कारोवार हुनु स्वाभाविकै हो । लक्ष्यभन्दा बढी दर्खास्त पर्न र रकम जम्मा हुन आएमा नलिने भन्ने प्रश्न आउँदैन । तसर्थ कमिशन र बजेटसम्बन्धी सम्झौता मा अनुसूचीमा नै विभिन्न शीर्षकअन्तर्गत हुनसक्ने “अनुमानित खर्च” भनी पेश गरेको र सम्झौता आफैले पनि दफा ८ मा अनुसूचीकृत शीर्षक र अनुसूचीकृत शीर्षकमा देखाइएको खर्चहरू “अनुमानित” भनी स्पष्ट भनेको देखिन्छ । त्यसमा वादीले आपत्ति गरेको वा इन्कार गरेको देखिँदैन । सम्झौता गरेपछि सम्झौताको शर्त मात्र होइन सम्झौतामा अनुसूचीकृत गरिएको अनुसूची पनि सम्झौताको अभिन्न अङ्ग हो । त्यसैले दफा (c) मा अनुसूचीमा उल्लेख गरिएको खर्चहरू “अनुमानित खर्च” हुन् भनी सम्झौतामा नै उल्लेख भएको हुँदा अनुमानित भन्दा बढी हुन आएको वास्तविक खर्च रु. १५,१९,१८३।७५ समेत पुनरावेदक प्रतिवादीले पाउनु पर्ने निजको करारद्वारा सृजित हक हो भने विपक्षी बैंक अनुमानितभन्दा बढी भएको वास्तविक खर्च भराउन करारद्वारा कटिबद्ध हुनुपर्ने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल भदौ ४ गते रोज ५ शुभम् ।

१६.

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०५९ सालको रिट नं. २५०९, उत्प्रेषण, गिरीधारी महतो समेत वि. भूमिसुधार कार्यालय पर्सा समेत

सुनुवाईको मौका नदिई निर्णय गर्न नहुने अवधारणालाई महत्वपूर्ण स्थान प्रदान गरिएको विवादरहित रूपमा मान्नुपर्ने हुन्छ । कसैलाई कुनै आरोप लगाइएको अवस्थामा कसूर प्रमाणित गर्न उसलाई प्रतिवाद गर्ने मौका प्रदान गर्नु उसले प्रस्तुत गरेको प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी दुवै पक्षको प्रमाणको मूल्याङ्कन एवं विश्लेषण तथा विवेचना

गरी वास्तविकता पत्ता लगाई न्यायिक निर्णय दिनु नै स्वच्छ सुनुवाईको मूलभूत अवधारणा हो । यस अवधारणाको अन्तिम उद्देश्य न्यायलाई संरक्षित गर्नु हो ।

विलम्बको सिद्धान्तको एक मात्र वास्तविक तत्वमा समयको अन्तराल प्रमुख तत्व भए पनि विलम्ब हुन गएको प्रमुख कारणको औचित्यको विश्लेषण गर्दा निवेदकले समयमा आफ्नो अधिकारको उपभोगमा सचेतता र सजगता नदेखाई उदासीनता देखाएको स्पष्ट रूपमा पुष्ट्याई हुनुपर्दछ । विलम्ब सिद्धान्तको दुहाई दिने पक्षले यसको औचित्य पुष्ट्याईको लागि मौकामा प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपमा निजका विरुद्ध गरिएको आदेश वा कारवाहीको सोही अवसरमा जानकारी प्राप्त थियो भन्ने वस्तुनिष्टरूपमा पुष्ट्याई गर्न सक्नुपर्ने ।

कानूनद्वारा स्थापित सर्वमान्य सिद्धान्त वा आदेशप्रतिकूल कुनै निकाय वा अधिकारीले कानून उल्लङ्घन गरी कुनै निर्णय गरी कसैले संरक्षित अधिकार कुण्ठित गरिन्छ भने त्यस अवस्थामा असाधारण अधिकारको क्षेत्राधिकारको शरणमा विवशतापूर्वक जानुपर्ने स्थिति सिर्जना हुन्छ, र यस्तो अवस्थामा असाधारण अधिकार मुकदर्शक भएर बस्न पनि मिल्दैन । असाधारण परिस्थितिमा क्रियाशील हुने यो यस्तो अस्त्र हो जसले कुण्ठित अधिकार प्रचलन गर्न प्राण सञ्चय गर्न सन्जिवनी प्रदान गर्दछ । तसर्थ यसलाई सधैँ साधुरो लक्ष्मण रेखामा सीमित राखी व्याख्यान गर्दा यसको औचित्य नै ह्रास हुने प्रबल सम्भावना सिर्जना हुने ।

इजलास अधिकृत : धुवराज त्रिपाठी
कम्प्युटर : विश्वराज पोखरेल
इति संवत् २०६६ साल भदौ २३ गते रोज ३ शुभम् ।
यसै लागाउको निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन् ।

- २०६० सालको रिट नं. ३४४०, उत्प्रेषण, शिवनाथ महतो केवट समेत वि. भूमिसुधार कार्यालय पर्सा समेत

- २०६० सालको रिट नं. ३३४७, उत्प्रेषण, गिरीधारी महतो समेत वि. मालपोत कार्यालय पर्सा समेत
- २०६० सालको रिट नं. ३५६६, उत्प्रेषण, बिगानी देवी राउत समेत वि. भूमिसुधार कार्यालय पर्सा समेत

१७

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०५९ सालको रिट नं. २६१३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, प्रचण्डविक्रम शाह समेत वि. मालपोत कार्यालय बारा समेत

जुन निर्णयबाट निवेदकहरूको हक भएको भनिएको हो सो निर्णय नै तह-तह पुनरावेदन परी बदर भएको देखिन आउँछ । यस अदालतको अन्तिम फैसला समेतबाट बदर भैसकेको शुरु मालपोत कार्यालयको दा.खा.निर्णयबमोजिम आफ्नो हक भएकोले त्यस्तो हक अन्यथा गर्दा निवेदकहरूलाई सुनुवाईको मौका दिनुपर्ने भन्ने निवेदन दावी समेत आधारहीन देखिएको छ । कानूनबमोजिम भएको अन्तिम फैसलाबमोजिम मात्र कसैको हक प्राप्त वा समाप्ति हुन सक्ने हुन्छ । मुद्दाको अन्तिम किनारा लाग्नु अगावै कुनै तहबाट भएको र अन्तिम हकसम्म कायम रहन नसकेको निर्णयबाट कसैको हक प्राप्त र समाप्ति हुन सक्ने अवस्थामा परिकल्पना गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायण सुवेदी

कम्प्युटर : सीता गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २३ गते रोज २ शुभम् ।

यस्तै प्रकृतिको निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन् ।

- २०५९ सालको रिट नं. २९०६, उत्प्रेषण समेत, रोशन मियाँ अन्सारी वि. मालपोत कार्यालय बारा समेत

- २०५९ सालको रिट नं. २९१२, उत्प्रेषण समेत, रोसन मियाँ अन्सारी समेत वि. मालपोत कार्यालय बारा समेत

इजलास नं. ४

१.

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ, २०६३ सालको रिट नं. निवेदन नं. ०७८१, उत्प्रेषणसमेत, हरिसिंह धामी समेत वि. महेन्द्रनगर नगरपालिका कञ्चनपुर समेत

महेन्द्रनगर नगरपालिकाले मिति २०६३।१।३ को स्थानीय विकास मन्त्रालयको पत्रलाई आधार बनाई पदपूर्ति गर्न इन्कार गरेको र स्थानीय विकास मन्त्रालयले सो पत्र नगरपालिकाको मागबमोजिम दिइएको रायसम्बन्धी पत्र हो जुन स्वयंममा निर्देशन वा निर्णय नभएको र त्यसलाई मान्न कुनै निकाय वाध्य नभएको र अर्भ स्थानीय निकायहरू आफ्नो कामकारवाही गर्न स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, २०५५ बमोजिम अधिकारसम्पन्न रहेको भनी आफ्नो लिखित जवाफमा गरेको स्पष्ट उल्लेखनबाट सोही मिति २०६३।१।३ को परिपत्रको कारण उक्त पदपूर्तिसम्बन्धी काम कारवाहीलाई असर पर्ने देखिन नआउने।

जुन पत्रको आधारमा पदपूर्तिसम्बन्धी काम कारवाहीमा अवरोध आएको भनिएको हो सोही पत्र लेख्ने स्थानीय विकास मन्त्रालयले नगरपालिका स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, २०५५ अन्तर्गत अधिकारसम्पन्न निकाय भएकोले आफ्नो काम कारवाही गर्न स्वतन्त्र रहेको र राय स्वयंमा निर्णय वा निर्देशन नभएको भनी लिखितजवाफमा उल्लेख गरेको आठौँ नगर परिषद्ले स्वीकृत गरेको कर्मचारी प्रशासनसम्बन्धी विनियमावली, २०६० मा उक्त विज्ञापन गरिएको पद समावेश भएको

अवस्थामा स्थानीय विकास मन्त्रालयको पत्रको कानूनी अस्तित्व नरहेको र पदपूर्तिको काम कारवाहीमा सो पत्रको खास भूमिका नरहेको हुँदा त्यसलाई बदर गरिरहन नपर्ने।

इजलास अधिकृत : कृपासुर कार्की
कम्प्युटर : नम्रता बास्तोला

इति संवत् २०६६ साल असोज २० गते रोज ३ शुभम्।

- यस्तै प्रकृतिको २०६४ सालको रिट नं. १२३०, उत्प्रेषण समेत, हरिसिंह धामी समेत वि. महेन्द्रनगर नगरपालिका महेन्द्रनगर कञ्चनपुर समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ।

२.

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५ सालको रिट नं. ०६५-WO-००३३, उत्प्रेषण समेत, मनोजकुमार प्रसैला यादव वि. पूर्वक्षेत्र प्रहरी कार्यालय रानी समेत

प्रहरी नियमावली, २०४९ को नियम ८९(२) मा प्रहरी कर्मचारीलाई सजायको आदेश दिनुअघि कारवाही गर्न लागिएको उल्लेख गरी हुनसक्ने सजाय समेत खुलाई सूचना दिई निजलाई आफ्नो सफाइ पेश गर्ने मौका दिनुपर्छ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। त्यस्तो सूचना दिँदा लगाइएको आरोप स्पष्ट रूपले किटिएको हुनुपर्ने र प्रत्येक आरोप कुन कुरा र कारणमा आधारित छ भन्ने समेत खुलाउनुपर्नेछ भन्ने प्रावधान उक्त नियम ८९(२) मा रहेको छ। रिट निवेदकका नाममा जारी गरिएको मिति २०६३।१।१८ गतेको उक्त म्याद सूचनामा नियम ८९ (२) बमोजिम लगाइएको आरोप प्रष्ट किटान गरिएको र प्रस्तावित सजाय उल्लेख गरिएको समेत देखिँदैन। यसबाट निवेदकलाई सफाइ पेश गर्ने कानूनबमोजिमको मौका प्रदान गरिएको भन्ने नदेखिने।

इजलास अधिकृत : मातृकाप्रसाद आचार्य

इति संवत् २०६६ साल माघ ११ गते रोज २ शुभम्।

इजलास नं. ५

१.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०३०१, घर भत्काई पाऊँ, पुष्पलाल श्रेष्ठ वि. सावित्री श्रेष्ठ समेत

अनियमित तरिकाले घर निर्माण गरेकोले भत्काई पाऊँ भन्ने मुद्दामा घर निर्माण कार्य महानगरपालिकाबाट स्वीकृत नक्सा पासबमोजिम निर्माण कार्य गरेको छु छैन हेर्ने निकाय महानगरपालिका भएको र सोमा महानगरपालिकाले निर्णयसमेत गरी अन्तिम भएको भए तापनि उक्त मुद्दामा वादीको घरजग्गामा खिचोला भएको भन्ने कुराको उजूरी महानगरपालिकामा नदिएको र महानगरपालिका घरजग्गा खिचोला सम्बन्धमा निर्णय गर्ने निकायसमेत नभएको अवस्थामा प्रस्तुत वादीको दावीलाई अन्यथा मान्न नसकिने ।

प्रस्तुत विवाद Plainth Ares घटी बढी भएको सम्बन्धमा नभई पुनरावेदक वादीको पहिले नै निर्माण भएको घरको छतमाथिको भागमा प्रत्यर्थी प्रतिवादीले नक्सा पास गरी निर्माण गर्दा चौथो तल्लामाथि वादीको घरतर्फ टप निकालेको विवाद भएको र अदालतबाटै भै आएको नक्सा मुचुल्कासमेतबाट प्रतिवादीले १ फीट ६ इञ्च वादीको घरको छतमाथिको आकाशको Space Area मा टप निकाली खिचोला गरेको स्पष्ट देखिई रहेकोमा सो नक्साको मूल्याङ्कन र विवेचना नै नगरी प्रतिवादीले नापनक्सा पासभन्दा कममा घर निर्माण गरेको भन्ने आधार लिई प्रतिवादीले वादीको घरको छतमाथि १ फीट ६ इञ्च पर्ने गरी बनाएको टप भत्काउन नपर्ने गरी वादी दावी पुन नसक्ने गरी भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई शुरु काठमाडौँ जिल्ला अदालतबाट १ फीट ६

इञ्च टप भत्काई दिने ठहराई भएको फैसला नै सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २२ गते रोज २ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०६५-CI-०५९९, निषेधाज्ञा, रामदयाल गुप्ता वि. राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक पिडारी चोक शाखा जनकपुरधाम समेत

विवादित जग्गाको साविक मूल कि.नं. ५२ को ज.वि. ०-३-३-३ जग्गा पूरै रोक्का रहेकोमा सोही कि.नं. का जग्गा लिनुदिनु गरेको कार्यउपर यिनै पक्ष विपक्षीहरू बीच शुरु अदालतमा मुद्दा चली विचाराधीन रहेको अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दाबाट तथ्यमा प्रवेश गरी प्रमाणसमेत बुझी निर्णय हुने अवस्था नहुँदा निवेदन मागबमोजिम परमादेशको आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०६५-CI-०६०२, निषेधाज्ञा, ईश्वर मण्डल धानुक वि. पुरुषोत्तमलाल अग्रवाल समेत

कानूनबमोजिम उपचार खोज्न गएका बखत सोहीबाट उपचार प्राप्त हुने नै हुन्छ । यसरी विपक्षीको आफ्ना नाउँमा दर्ता जग्गामध्ये केही बिक्री गरिसकेको र बाँकी रहेको आफ्नो जग्गामा पर्खाल लगाउन रोकी पाऊँ भन्ने निवेदकलाई निर्विवाद हक रहेको देखिन आएन । यी निवेदकको भनिएको कि.नं. १३९ को जग्गा निजको नाममा आई नसकेको र विपक्षीको नाममा दर्ता भै केही बिक्री गरी केही बाँकी रहेको अवस्थामा निवेदकको निर्विवाद हक भएको सबूद प्रमाणको अभावमा घर,

पर्खाल नबनाउनु भनी स्थायी प्रकृतिको निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न युक्तिसंगत नहुने ।
इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।

४.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०६५-CI-०६०३, निषेधाज्ञा, *जानकी देवकी वि. पुरुषोत्तमलाल अग्रवाल समेत*

दर्ता बदर दर्ता मुद्दा र जालसाजी मुद्दासमेत दायर गरी हाल धनुषा जिल्ला अदालतमा विचाराधीन रहेको अवस्था विद्यमानता भएकोले विवादित जग्गामा निवेदिकाको हक पुग्ने हो होइन र विपक्षीको नाउँको दर्ता बदर हुने हो होइन भन्ने प्रश्नको निराकरण सोही मुद्दाबाट नै हुने देखिन्छ । निषेधाज्ञाको मुद्दाबाट हक बेहकको प्रश्नमा बोल्न मिल्ने अवस्था देखिएन । तसर्थ विवादित जग्गामा निवेदकको निर्विवाद हक पुगेको प्रमाणको अभावमा निवेदन मागबमोजिमको निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८८४४, छुट जग्गा दर्ता दा.खा., *मालपोत कार्यालय सुनसरी वि. राधादेवी थापा*

छुट जग्गा दर्तासम्बन्धमा पुनरावेदन अदालत विराटनगरले मालपोत कार्यालयउपर परेको पुनरावेदनमा न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा १४(घ) बमोजिम पुनरावेदन अदालत आफैले आवश्यक प्रमाण बुझी निर्णय गर्नसक्ने कानूनी व्यवस्था भएको र प्रस्तुत मुद्दाको विषयवस्तु पनि पुनरावेदन अदालत आफैले निर्णय गर्नु उपयुक्त हुने देखिँदा मालपोत कार्यालय

सुनसरीमा पुनः निर्णय गर्नको निमित्त पठाउने गरी गरेको निर्णय नमिलेकोले त्रुटिपूर्ण हुँदा बदर हुने ।
इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन
कम्प्युटर : भवानी हुंगाना
इति संवत् २०६६ साल भदौ २९ गते रोज २ शुभम् ।

६.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६१ सालको दे.पु.नं. ३८००, बिक्री कर, *आन्तरिक राजस्व कार्यालय धरान वि. बजरंगलाल अग्रवाल*

सरकारद्वारा गरेको दर निर्धारण सम्बन्धमा समय समयमा नीतिगत निर्णय गरी समयसापेक्ष रूपमा सरकारले परिवर्तन गर्नसक्ने कानूनी व्यवस्था विद्यमान रहेको र सोहीअनुरूप कर लगाउने, उठाउने, खारेज गर्ने, छुटदिने नदिने, भइरहेकोमा परिवर्तन गर्ने जस्ता कार्य गरी कर प्रणालीलाई व्यवस्थित गर्नसक्ने भएबाट राज्यले छुट दिएमा वा कानूनले दिएको सुविधामा अतिक्रमण वा अपहरण नहुने गरी तोकिएबमोजिमको शुल्क सरकारलाई तिर्न बुझाउन पर्ने दायित्व भएको औद्योगिक प्रतिष्ठानले कानूनबमोजिम अधिकार प्राप्त निकायबाट निर्धारण गरेको दररेटअनुसारको कर तिर्न बुझाउन नपर्ने भनी अर्थ गर्न नमिल्ने ।

राजस्व रकम असूल गर्ने निकाय कर कार्यालयले पनि खुद्रा मूल्यमा तोकिएको दररेट बमोजिम बिक्री कर लगाई असूलउपर गर्ने र खुद्रा मूल्य कायम गर्न उत्पादकले पाउने मूल्यमा अन्तःशुल्क जोडी हुनआउने रकममा वितरण खर्च वा निश्चित रकम थप गरी बिक्री मूल्य कायम गरी अन्तःशुल्कसमेत समावेश बिक्री कर असूल गर्नुपर्ने नपुग बिक्री कर रकम कर निर्धारण आदेशद्वारा असूलउपर गर्नसक्ने नै देखिँदा कर कार्यालयले सोहीअनुसार असूलउपर गर्ने गरेको निर्णय कानूनसम्मत देखिने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल
कम्प्युटर : भवानी हुंगाना
इति संवत् २०६६ साल साउन २७ गते रोज ३ शुभम् ।

- यसै लगाउको २०६१ सालको दे.पु.नं. ३८०१, विक्री कर, *आन्तरिक राजस्व कार्यालय धरान वि. बजरंगलाल अग्रवाल* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ।

७.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६३ सालको दे.पु.नं. ०६३-CI-०२१७, ०२१९, ०२२०, ०२२१, अंश दर्ता, *मञ्जूदेवी समेत वि. सुरेशप्रसाद कोइरी समेत*

रिभवापत हालैको बकसपत्र स्वरूप पाएको जग्गा आफ्नो सगोलको परिवारका सदस्यभन्दा बाहिरका व्यक्तिबाट रिभवापत पाएको र सो हालैदेखिको बकसपत्र कीर्ते जालसाजी हो भनी प्रमाणित गर्न सकेको नदेखिँदा त्यस्तो सम्पत्ति संशोधनसहितको अंशवण्डाको १८ नं. ले समेत वण्डा नलाग्ने र निजी ठहर्ने।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक ११ गते रोज ४ शुभम्।

८.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०६४-CI-०८०७, हक निखनाई पाऊँ, *रामऔतार यादव वि. राजदेव यादव*

बाटो-घाटो पानी-पधेंरो, आवत-जावत निकास आदि रोकिन गै बाधा व्यवधान पर्न गएको भन्ने भनाई युक्तियुक्त नदेखिँदा जग्गाको सीमानासम्म मात्र जोडिनु सन्धिसर्पनको लागि पर्याप्त आधार हुन नसक्ने।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक ८ गते रोज १ शुभम्।

- यसै प्रकृतिको २०६४ सालको दे.पु.नं. ०६४CI-०८०६, लिखत दर्ता बदर, *रामऔतार यादव वि. राजदेव यादव* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ।

९.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६० सालको दे.पु.नं. ९४४६, अंश छुट्टयाई दर्ता गरिपाऊँ, *महावतीदेवी थरुनी समेत वि. घुरनलाल चौधरी*, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४०४, *घुरनलाल चौधरी वि. महावतीदेवी थरुनी समेत*

चार अंशियार कायम भै वण्डा हुने ठहर फैसला भई फैसला कार्यान्वयनको अन्तिम चरणमा पुगेपछि आमा टेहरीदेवीको मृत्यु भएको अवस्थामा आमाको भागमा पर्ने सम्पत्तिमा वण्डा गरिपाउन वादीले फिराद दिन पाउने।

चार अंशियारमध्येका एक अंशियारले दिएको अंश मुद्दामा मिति २०३९।६।२६ मा फैसला हुँदा २०३०।४।८ मा कायम भएका तीन अंशियारको भागबाट एक-एक भाग बदर भई अंश भाग लाग्ने ठहर भएको नभई तीन अंशियारको बदला चार अंशियार कायम भएको छ। छोराहरूले आफूहरू बीच तीन अंशियार देखाई वण्डापत्र गरी अंशियार आमा टेहरीदेवीलाई लोप गराई वण्डापत्र गरेको कार्य आफैमा कानूनअनुरूपको नभएको आमाले छोराहरूसँग अंश मुद्दा गरी अदालतबाट आमासमेत अंशियार कायम भई वण्डा हुने ठहर भएपछि पहिले छोराहरूका बीचमा मात्र भएको वण्डापत्रको सम्पत्तिबाट अदालतको फैसलाबमोजिम वण्डा छुट्टयाई लिन सो फैसला कार्यान्वयन गर्न नपाउँदै अंशियार आमाको मृत्यु भएको देखिँदा पहिलेको निष्क्रिय भइसकेको मिति २०३०।४।८ को तीन अंशियार कायम गरी भएको वण्डापत्रको कागज नै कायम रहिरहने भनी अर्थ गर्न नमिल्ने।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल साउन २८ गते रोज ४ शुभम्।

१०.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८५११, अंश, *हीरा दास वि. अफिलाल दास*

सट्टा भर्नाबापत प्राप्त गरेको जग्गा निजको निजी आर्जन वा कमाइबाट प्राप्त भएको नभई निजका सकल परिवारलाई एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा सार्दा सट्टापट्टास्वरूप प्रदान गरेको जग्गा देखिँदा निजी आर्जनको भनी अर्थ गर्न नमिल्ने ।

उक्त जग्गा पैत्रिक भई वण्डा हुन बाँकी भन्ने प्रमाणित र पुष्टि भइरहेको समेतको अवस्था देखिँदा विवादित सम्पत्तिमा पुनरावेदक वादीको अंश हक लाग्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल असार ३१ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. ७

१.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६३ सालको रिट नं. ३५२०, उत्प्रेषण समेत, *अष्टराज बज्राचार्य वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत*

सैनिक व्यापारिकले कुनै पनि नागरिकलाई नियमित रूपमा तारिखमा राखेर नागरिकको वैयक्तिक स्वतन्त्रताको हक अधिकारको उपभोगमा प्रतिवन्ध लगाउने कार्य कुनै पनि कानून एवं नियमअनुकूल छ भनी विपक्षीले देखाउन नसकेको अवस्थामा गैरकानूनी रूपमा गरिएका कार्य एवं गैरकानूनी रूपमा निवेदकलाई पक्राउ गर्नसक्ने सम्भावना रहेको देखिएको हुँदा निवेदक विरुद्ध तारेखमा राख्ने तथा पक्राउ गर्ने कुनै पनि कारवाही नगर्नु नगराउनु भनी राजदल गणका नाउँमा प्रतिषेधको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल

कम्प्युटर : वेदना अधिकारी

इति संवत् २०६६ साल भदौ १५ गते रोज २ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०५९ सालको स.फौ.पु.नं. ३२०६,

खयर काठ ओसार पसार, *नेपाल सरकार वि. दिनेशकुमार मण्डल समेत*

बरामदी मुचुल्कामा मौकामा पक्राउ परेका दिनेश मण्डल, शिवजी महतो र गोलु सिंह समेत रोहवरमा बसेको र निजहरूले उक्त बरामदी मुचुल्कालाई अन्यथा भन्न सकेको अवस्था समेत देखिँदैन । प्रतिवेदकहरूले अदालतमा उपस्थित भई आफ्नो प्रतिवेदनलाई समर्थन गरी ट्रयाक्टर र खयर काठ बरामद भएको हो भनी बकपत्र गरेको पाइन्छ । अदालतमा कसूरमा इन्कार रही वयान गर्ने प्रतिवादीहरू दिनेशकुमार मण्डल, शिवजी महतो र गोलु सिंहले कसूरमा संलग्न नभएको आफ्नो जिकीरलाई पुष्टि हुने गरी प्रमाण गुजार्न सकेको अवस्था मिसिलबाट देखिँदैन । निजहरूको रोहवरमा भएको बरामदी मुचुल्कालाई अन्यथा भन्न नसकेको तथा कसूरमा इन्कारी रहेको वयान जिकीरलाई पुष्टि हुने प्रमाण पेश गर्न नसकेको अवस्थामा निजहरूको आफूले सफाइ पाउनु पर्ने भन्ने जिकीरसँग सहमत हुन नसकिने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १६ गते रोज २ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६० सालको फौ.पु.नं. ३०९७, भ्रष्टाचार, *सानुकाजी महर्जन वि. नेपाल सरकार*

विवादित प्रतिवादीको प्रमाणपत्रका सम्बन्धमा सो प्रमाणपत्र जारी गर्ने विश्वविद्यालयले आधिकारीक रूपमा जवाफ पठाउँदा “छात्र सम्मिलित नही है” भन्ने व्यहोरा कैफियत महलमा उल्लेख गरी प्रमाणपत्र सक्कली नभएको अर्थ स्पष्ट हुने गरी जवाफ पठाएको अवस्थामा प्रतिवादीले आफ्नै पहलमा थप प्रमाण बुझी पाउँ भन्ने निवेदन साथ पेश गरेको प्रमाणपत्रसम्बन्धी विवरणलाई आधिकारीक मान्न सक्ने अवस्था नआउने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १६ गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं. ८

१.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६३ सालको दे.पु.नं. ७०५, अंश, जगत्रालक्ष्मी पौडेल समेत वि. मोहन सुनार

वादी प्रतिवादी अंशियार भएकोमा विवाद नदेखिएको र अंशबण्डा भएको भनी प्रतिवादीहरूले भन्न र कुनै सबूद प्रमाण पनि पेश गर्न सकेको मिसिलबाट नदेखिएको हुँदा वादीले प्रतिवादीहरूबाट अंश नपाउने भन्न मिलेन दावीबमोजिम वादीले प्रतिवादीबाट अंश पाउने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल असोज २८ गते रोज ४ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६५ सालको दे.पु.नं. ४६७, अंश नामसारी, रामकृष्ण त्रिपाठी (तिवारी) वि. अजोरा तिवारी

वादीले प्रतिवादीबाट अंश लिई पाई सकेको भन्ने कुराको सबूद प्रमाण प्रतिवादीले पेश दाखिल गर्न सकेको छैन । प्रतिवादीले मैले आमा (वादी) लाई पालनपोषण गरिरहेको हुँदा अंश दिनुपर्ने होइन भन्ने जिकीर लिए तापनि राम्ररी पालनपोषण गरी राखेको भए आमाले बुढेसकालमा छोरसँग अंश मागिरहन पर्ने अवस्था हुँदैन । साथै अंश जस्तो नैसर्गिक हकमा प्रतिवादीले पालनपोषण गरेको छु भन्ने जिकीर लिदैमा वादीले आफ्नो अंश भाग छुट्टाई लिन नपाउने भन्न पनि मिल्दैन । त्यसकारण वादीले प्रतिवादीबाट अंश पाउने ।

फिराद परेको अघिल्लो दिन अर्थात् २०५९।६।१३ गतेलाई मानो छुट्टिएको मिति कायम गरेकोमा प्रतिवादीले अन्यथा भन्न प्रमाणित गराउन सकेको पाइदैन । मानो छुट्टि सकेपछि लिएको सम्पत्ति वण्डा नलाग्ने निजी आर्जनको

भन्ने वादीको दावी समेत हुँदा सो सम्पत्तिबाट वण्डा लाग्न नसक्ने ।

आफ्नो निजी आर्जनको कमाइबाट विभिन्न मितिमा खरीद गरेको जग्गा वण्डा नलाग्ने भनी जिकीर लिए तापनि उक्त जग्गाहरू वादी प्रतिवादीहरू संगोलमै रहँदा खरीद गरेको देखिएको र फिराद परेको अघिल्लो दिन अर्थात् मानो छुट्टिएको मिति २०५९।६।१३ भन्दा अगाडि नै खरीद गरेको देखिएको हुँदा सो सम्पत्तिबाट वण्डा लाग्ने । ऋणका सम्बन्धमा प्रतिवादीले २०६०।२।८ मा प्रस्तुत मुद्दाको फिराद परेको अघिल्लो दिन अर्थात् मानो छुट्टिएको मिति २०५९।६।१४ भन्दा पछाडि लिएको देखिएको र मानो छुट्टिएपछि लिएको ऋण वादीले दामासाहीले तिर्नुपर्ने अवस्था नहुँदा सो ऋण पुनरावेदक प्रतिवादीले नै व्यहोर्नु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल असोज २८ गते रोज ४ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६५ सालको दे.पु.नं. ००९०, लेनदेन, खडकबहादुर बरुवाल वि. निर्मला गर्वुजा

प्रतिवादीले रु.७०,०००।- को लिखत पहिले भएको र त्यसमध्ये रु.२,१००।- व्याज बुझाइसकेको र वादीले तमसुक फेर्न भनी भनेकोले तमसुक फेर्ने क्रममा भुक्याई रु.१,२४,६००।- को तमसुकमा सही गराएछन् भनी इन्कारी प्रतिउत्तर फिराएको देखिए तापनि उक्त भनाईलाई पुष्टि गर्न सकेको पाइदैन । प्रतिवादीले सहिछाप गरेको वादी दावीको लिखतबमोजिमको रकम साँवा व्याज तिरी बुझाइसकेको सबूद प्रमाणको अभावमा सो लिखतलाई मान्यता नदिई प्रतिवादीको प्रतिउत्तर कथनलाई सहिसत्य मान्न पनि मिल्ने देखिएन । लिखत र त्यसमा परेका सहिछापलाई स्वीकार गरी अन्यथा भन्न नसकी सो

बमोजिमको साँवा व्याज तिरे बुझाएको पनि भन्न नसकी केवल अर्को तमसुकमा भुक्त्याई सही गराएछन् भनेकै भरमा प्रतिवादीको रकम तिर्नुपर्ने आफ्नो दायित्वबाट उम्कन नसक्ने भई निजले दावीबमोजिमको साँवा व्याज तिर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम् ।

४.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६५ सालको फौ.पु.नं. २७५, गाली बेइज्जती, *कृष्णबहादुर गुरुङ वि. कृष्णबहादुर रावल*

वादीले आफ्नो दावीमा उल्लेख गरेको दिन गाली बेइज्जती भएको कुरा वादीकै साक्षीलगायत कसैबाट पनि पुष्टि हुन सकेको छैन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ बमोजिम फौजदारी मुद्दामा दावी प्रमाणित गर्ने भार वादीमाथि हुनेमा सो कुरा वादीले पुष्टि गर्न सकेको पाइदैन । साथै वादीको फिराद लेख र निजका साक्षीको बकपत्र नै मेल नखाई एकापसमा बाभेको देखिएको समेत अवस्थामा फिराद कथन आधारमा गाली बेइज्जती गरेको ठहर गर्न न्यायोचित नहुने हुँदा वादी दावीबमोजिम प्रतिवादीले गाली बेइज्जती गरेको मान्न नसकिने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६६ सालको दे.पु.नं. ०९८४, हक सफा (निखन्न पाऊँ), *बहादुर साह वि. मुसहरनिया देवी साह*

विवादित जग्गा वादीको जग्गासँग जोडिएको नाताले मात्र सन्धिसर्पन परेको मान्न सकिँदैन किनभने सो विवादित जग्गामा प्रवेश नै नगरिकन पनि वादीले आफ्नो घरबास जग्गा पानी

पोखरी डिलसम्म आउन जानसक्ने देखिन्छ । तसर्थ विवादित जग्गा वादीको सन्धिसर्पन नपर्ने ।
इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम् ।

६.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६० सालको दे.पु.नं. ९६४३, लेनदेन, *ठागे नाउ मुसलमान वि. महरून्निसा नाउ*

प्रतिवादीहरू संगोलका अंशियार देखिएको, लिखतमा विवाद नभएको अवस्थामा संगोलको ऋण संगोलका अंशियारले तिर्नु बुझाउनुपर्ने कुरामा विवाद देखिँदैन । मुलुकी ऐन लेनदेन व्यवहारको ८ नं. मा घरमा मुख्य व्यक्तिले गरेको व्यवहारमा गोश्वारा धनबाट चल्छ भन्ने र अंशबण्डाको १८ नं. मा लेनदेन व्यवहारको ८ नं. बमोजिम लगाएको ऋण सबै अंशियारलाई भाग लाग्छ भन्ने व्यवस्था भइरहेको सन्दर्भमा प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादीहरू सविराका पति अदालतमा समेत ऋण लिँदा संगोलमा नै रहेको देखिँदा त्यस्तो ऋण तिर्ने नपर्ने भन्ने जिकीर तर्कसंगत नदेखिने ।
इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल असोज २७ गते रोज ३ शुभम् ।

७.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०५८ सालको दे.पु.नं. ८२०८, अंश नामसारी, *इस्लाम नाउ मुसलमान वि. ठागे नाउ मुसलमान*

अ.वं. १३९ नं. बमोजिम बुझिएका दुखीले आफू वादीका भाई भनी उल्लेख गरी अंश पञ्चायतबाट बुझी अलग भएको भने तापनि अंश बुझेको भरपाई पेश गर्न नसकेको र मौखिक भनाईलाई मान्यता दिई वादीले अंश बुझिसकेको भन्ने अनुमान गर्न नमिल्ने ।

आधिकारीक रुपमा निजहरूको वीचमा वण्डा भएको अवस्था नभै अदालतको आदेशबमोजिम वादी प्रतिवादीले पेश गरेको र प्राप्त हुन आएको वण्डा गर्नुपर्ने सम्पत्ति तायदाती फाँटवारीउपर पनि वादी प्रतिवादीले चित्त बुझाई बसेको अवस्था छ । त्यस्तै यस अदालतबाट मुद्दा

दोहोच्याई हेने आदेश हुँदा लिइएका आधारबमोजिमको प्रमाण बुझी मूल्याङ्कन समेत भइसकेको अवस्था र स्थितिमा पनि पुनरावेदन अदालतको फैसलालाई अन्यथा गर्न नपरी वादीले प्रतिवादीबाट दुई भागको एक भाग अंश पाउने ।
इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल असोज २७ गते रोज ३ शुभम् ।

८.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश बस्ती, २०६५ सालको CR ०३१७, डाँका, नेपाल सरकार वि. सन्तोष विकल बाँनिया समेत

कुनै व्यक्तिउपर दोष वा अभियोग लगाएको अवस्थामा दोष वा अभियोग लगाउनु मात्र पर्याप्त हुँदैन, सो कुरा प्रमाणको आधारमा पुष्टि गर्नु पर्ने ।

वसमत भएको भन्दा बढीको धनमाल यहाँ यसरी मासी खाएको वा विक्री व्यवहार गरेको भन्ने पनि देखिन आउँदैन । जाहेरीमा उल्लेख गरेको बाहेक अन्य सबूद प्रमाणबाट पुनरावेदन अदालत इलामले ठहर गरेको भन्दा बढी धनमाल डाँका गरेको भन्ने पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा बढी विगो कायम गरिपाऊँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकीर मनाशिव नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : लालप्रसाद अर्याल
इति संवत् २०६६ साल मंसिर ७ गते रोज १ शुभम् ।

९.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश बस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४९१, अंश नामसारी, तुलसी थारु समेत वि. गर्भु थारु समेत

तुलसी थारुले भरेको १ नं. अनुसूची (मोहीको लगत) वादीहरुको नागरिकता प्रमाणपत्र, गा.वि.स. ले गरिदिएको नाता प्रमाणपत्र एवं शुरु अदालतबाट भएको सर्जमिनको व्यहोरा अन्यथा भए प्रतिवादीले साक्षी सबूद प्रमाणसमेत पेश गरी प्रतिवाद जिकीर स्थापित गराउनु सक्नुपर्नेमा स्वयं प्रतिवादीका साक्षी मोहन साहीले बकपत्र गर्दा मूल पुरुष रामधनीका छोराहरुको नाम मात्र उल्लेख गरेको अवस्था भै वादीहरुले प्रतिवादीबाट अंश पाउनु पर्ने होइन थाहा छैन भनी प्रतिवादी जिकीर

खम्बीर हुने किसिमले बकपत्र गर्न नसकेको समेतका आधार प्रमाणबाट वादीहरु प्रतिवादीका पुस्तावली भित्रका अंशियार होइनन् भन्ने जिकीरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अंशियार नातामा प्रमाणित भैसकेको अवस्थामा आफूबाट अंश पाइसकेको भन्ने सम्बन्धमा कुनै जिकीर समेत नरही वादी प्रतिवादीबीच अंशवण्डा भएको देखिने आधिकारिक लिखतको अभावमा अंशवण्डा भैसकेको भन्न नसकिने ।

इजलास अधिकृत : हरिराज कार्की
इति संवत् २०६६ साल मंसिर ३ गते रोज ४ शुभम् ।
यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरुमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन् :

- २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४९२, लिखत दर्ता बदर, तुलसी थारु समेत वि. गर्भु थारु समेत
- २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४९३, लिखत दर्ता बदर, तुलसी थारु समेत वि. गर्भु थारु समेत
- २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४९४, लिखत दर्ता बदर, तुलसी थारु समेत वि. गर्भु थारु समेत
- २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४९५, लिखत दर्ता बदर, तुलसी थारु समेत वि. गर्भु थारु समेत

१०.

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६० सालको रिट नि.नं. ३२६९, उत्प्रेषण समेत, रामगोपाल घिसिङ वि.आन्तरिक राजश्व विभाग काठमाडौँ समेत

टेलिफोनको सेवा लिए वापत तिर्नुपर्ने कर टेलिफोनको स्वामित्वमा लाग्ने कर नभई टेलिफोनको सेवा प्राप्त गर्नेले तिर्ने कर हो । यो सेवा करदाताको आफ्नो नाममा जडान गरेको टेलिफोनबाट पनि प्राप्त गर्न सक्छ र अन्य कुनै व्यक्तिको नाममा दर्ता भएको टेलिफोनलाई बहाल वा अन्य व्यवस्थाअन्तर्गत पनि प्रयोग गर्न सकिन्छ । यसले निवेदकले प्रयोग गरेको टेलिफोनको स्वामित्व निजमा छ, छैन भन्ने कुराभन्दा पनि उक्त टेलिफोन निजले आफ्नो व्यवसायमा प्रयोग गरेको छ, छैन भन्ने कुरा हेर्नुपर्ने

हुन्छ । कुनै पनि टेलिफोन करदाताले आफ्नो व्यवसायको लागि प्रयोग गरेको देखिएको अवस्थामा उक्त सेवा प्राप्त दर्ता तिरेको कर निजले कट्टा गरी लिन नपाउने भन्ने नहुने ।

इजलास अधिकृत : शिशिरराज ढकाल

इति संवत् २०६६ साल असोज २० गते रोज ३ शुभम् ।

इजलास नं. ९

१.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६० सालको स.फौ.पु.नं. ३४१६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. वीरेन्द्रकुमार यादव समेत

एकजनाको चोटको कारणबाट मात्र मृतक रघुनन्दनको मृत्यु भएको पुष्टि भएको अवस्थामा अन्यको पनि संलग्नता छ भनी अनुमान र शंकाको आधारमा सजाय गर्न मिल्दैन । घटनास्थलमा उपस्थिति देखिनु नै कसूरदार कायम गर्ने आधार होइन । कसूरदार कायम हुन कसूर गरेको देखिनु पर्दछ । कुनै प्रकारको कसूरजन्य कार्य (Criminal Act) अर्थात् Actus Reas नै प्रमाणित नभएको स्थितिमा सामूहिक उपस्थितिलाई सामूहिक अपराधको रूपमा लिन मिल्दैन । जसले जे गरेको छ, त्यसैको सजायभागी हुन सक्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २३ गते रोज २ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३ WO १२२८, उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश, आशा चौधरी वि. ठगा चौधरी समेत

विलम्बकर्ता स्वयं विलम्ब हुनाको उचित कारण देखाउन सक्दैन भने अदालतले त्यसलाई स्वाभाविक मान्न सक्ने अवस्था हुँदैन । जसको अधिकार गैरकानूनीरूपले कुण्ठित हुन्छ वा आघातीत हुन्छ, त्यो व्यक्ति यथाशीघ्र छिटो समयमा त्यसको प्रचलनको लागि प्रयास गर्नु स्वाभाविक हो । रिटको कुनै हदम्याद हुँदैन । यसको तात्पर्य जहिलेसुकै पनि आफूखुशी

अदालतमा प्रवेश गर्न पाउने भन्ने होइन । आफ्नो अधिकारप्रति सचेत नरहने, अनावश्यक ढिलाई गर्ने वा विवादित अधिकारको प्रचलन गराउन खोज्ने व्यक्तिका लागि आफ्नो असाधारण अधिकारक्षेत्र प्रयोग गरी यस अदालतले रिट जारी गर्दैन । अपितु सफा हातले, यथासमयमा अदालत प्रवेश गरेको र वास्तवमै गैरकानूनी ढंगले कुण्ठित गरिएको अधिकारको प्रचलनको लागि यस अदालतले यस अधिकारक्षेत्रको प्रयोग गर्ने गरेको छ । रिट निवेदन यत्तिका विलम्ब गर्नु पर्ने मुनासिब माफिकको विश्वासिलो कारण समेत निवेदकले देखाउन सकेको छैन । त्यस कारण प्रस्तुत रिट निवेदन विलम्बको सिद्धान्त (Doctrine of Latches) अनुसार खारेजभागी हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ५ गते रोज ६ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६५ RC ०१०३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. नवलदास तत्मा

सामान्य इन्कारीले मात्र कुनै अभियुक्तले आरोपित कसूरबाट फुर्सद पाउन र सजायबाट उन्मुक्ति पाउन सक्दैन । सजायबाट बच्नका लागि अदालतमा सामान्यरूपले इन्कारी बयान गर्नु एउटा कुरा हो र त्यसको पुष्ट्याईका लागि विश्वसनीय र ठोस आधार, प्रमाण पनि पेश गर्नसक्नु अर्को कुरा हो । दुवै अवस्थामा अदालतले गम्भीरतापूर्वक विचार गर्नुपर्ने हुन्छ । दुईमध्ये दोस्रो अवस्था बढी विश्वसनीय हुन सक्दछ जसको खण्डन वादीपक्षबाट हुन नसकेमा निर्दोषिताको लागि प्रमाणको रूपमा ग्राह्य हुन सक्दछ । तर अभियोजन पक्षबाट उल्लेख्य प्रमाणहरूको उपस्थितिमा अभियुक्तको पहिलो अवस्थाको सामान्य इन्कारी मात्र निजको निर्दोषिताको प्रमाण बन्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ५ गते रोज ६ शुभम् ।

४.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ RC ००७०, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. रामअवतार महतो समेत पोष्टमार्टम भनेको मृत्युको कारणलाई चिकित्सा विज्ञानको प्रविधि प्रयोग गरी प्रष्ट पार्ने प्रयोजनका लागि गरिने कार्य हो । पोष्टमार्टम नहुँदा सोही आधारमा कसूरदारको कसूर क्षम्य हुँदैन वा निजले कसूरवापत कानूनबमोजिम हुने सजायबाट उन्मुक्ति प्राप्त गर्न नसक्ने ।

मृतकको लाश नै सडिगली हड्डी मात्र बाँकी रहेको अवस्था पोष्टमार्टम हुन नसक्नु र त्यसबाट मृत्युको सम्भावित कारण खुल्न नसक्नु स्वाभाविक कुरा हो । तर, अन्य स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट हत्याको वारदात स्थापित भई प्रतिवादीहरू विरुद्धको अभियोग शंकारहित तवरले प्रमाणित भएको छ भने पोष्टमार्टम हुन नसकेको भन्ने आधारमा निर्दोषिता सावित हुने होइन । सबै प्रमाणहरूको साङ्गोपाङ्गो विवेचना र मूल्याङ्कन गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ५ गते रोज ६ शुभम् ।

इजलास नं. १०

१.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०५८ सालको दे.पु.नं. ८१८३, कोठा खाली गरिपाऊँ, गणेशभक्त श्रेष्ठ वि. ज्ञानहरि अधिकारी

वादी र प्रतिवादीका नाममा संयुक्त दर्ता रहेको घर जग्गामा वादी प्रतिवादीको दुवैको बराबर हक रहेको मान्नुपर्ने अवस्था प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६(ख) ले व्यवस्था गरेको देखिएकोले फिराद दावी अनुसारको कोठामा वादी पक्षको मात्र हक रहेको भनी सम्भन नमिले ।

यसरी वादी प्रतिवादी दुवै संस्थाको नाममा संयुक्त दर्ता कायमै रहेको उल्लिखित घर जग्गा दुवैले भोगचलन गरिआएको तथा उक्त भवनमा निम्न माध्यमिक विद्यालयसमेत सञ्चालनमा रहेको भन्ने देखिएको अवस्था हुँदा वादी पक्षले गरेको पत्राचारकै आधारमा मात्र वादीको दावीबमोजिम उक्त भवनका कोठाहरू पुनरावेदन प्रतिवादी नेपाल बाल संगठनले खाली गरिदिनु पर्छ भन्न सकिने स्थिति नहुँदा साविकदेखि प्रतिवादीले भोगचलन गरिरहेको कोठा खाली गरिपाऊँ भन्ने वादी दावी पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : हरिराज कार्की

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक ८ गते रोज १ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री प्रकाश बस्ती, २०५९ सालको दे.पु.नं. ९१७१, बाटो च्यापी भवन निर्माण, इन्द्रमुखी देवी भा समेत वि. शुभकला देवी भा

साविक एउटै दाता रामबाबु तमोलीबाट जग्गा खरीद गर्ने उत्तरतर्फका प्रतिवादी शुभकलादेवीको जग्गा उत्तरतर्फ बाटो रहेकोमा जनकपुर न.पा. वार्ड नं. ४ का वडा अध्यक्षको रोहवरमा मिति २०५६।८।२३ मा भएको सर्जमिन मुचुल्काबाट उल्लिखित प्रतिवादीको कि.नं. २५ को पूर्वतर्फबाट ६ फीट बाटो कायम गरी उल्लिखित जग्गा कि.का. भै कि.नं. २३० शुभकलादेवी र कि.नं. २३१ मा ६ फीटे बाटो कायम भएको नापीशाखाबाट प्राप्त नक्सा उतारबाट देखिन आएको छ । उक्त कि.नं. २३१ को बाटो बाहेक वादीहरूको कि.नं. २६ र २७ का घरजग्गामा आवतजावत गर्ने अन्य कुनै वैकल्पिक पहुच मार्ग रहे भएको कुरा मिसिल प्रमाणबाट देखिन नआएवाट उक्त विवादित ६ फीटे बाटो नै वादीहरूको घर जग्गामा आवतजावत गर्ने एकमात्र बाटो रहेको पाइन्छ भने अर्कोतर्फ प्रत्यर्थी प्रतिवादीले उक्त विवादित जग्गा समेतमा पर्खाल लगाउनको लागि नक्सा पासको लागि नगरपालिकामा निवेदन दिएको र सर्जमिनको लागि

आदेश भैसकेपछि २०५५ माघमा पर्खाल लगाएको कुरालाई नगरपालिका समक्ष दिएको लिखित जवाफमा उल्लेख गरी नक्सा पास नहुँदै पर्खाल बनाएको कार्यलाई स्वीकार गरेको अवस्था देखियो । साथै उक्त नक्सा पास सम्बन्धमा नगरपालिकाबाट मिति २०५६।०।२३ मा भएको सर्जमिन हेर्दा सर्जमिनका मानिसहरूले पनि प्रतिवादीको जग्गाको पूर्वतर्फ बाटो रहेको कुरालाई सर्जमिनमा स्पष्टसँग लेखाइदिएको पाइएबाट समेत विवादित जग्गामा ६ फीट बाटो रहेभएको कुरा पुष्टि हुन आएको अवस्था हुँदा प्रतिवादीले नक्सा पास इजाजतबिना उल्लिखित ६ फिट बाटो समेतको जग्गामा बनाएको पर्खाललाई बाटोमा परेको ६ फिट जति पर्खाल भत्काई दिने गरेको जनकपुर नगरपालिका कार्यालयको निर्णयलाई अन्यथा मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : हरिराज कार्की

इति संवत् २०६६ साल भदौ १४ गते रोज १ शुभम् ।

- यसै लगाउको २०५९ सालको फौ.पु.नं. ९१७२, नक्सा पास रोक्का गरिपाऊँ, जयन्ती देवी भा वि. शुभकलादेवी भा भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

३.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८६३२, जग्गा खिचोला मेटाई चलन, मुन्नु नाउँ समेत वि. खलिल दर्जी समेत

पूरे जग्गामा खिचोला गरेको हो कि भन्ने जस्तो अर्थाभाव भल्कने देखिए पनि वास्तविकतामा वादी दावीमा सीमित रही गरेको कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको इन्साफलाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको फैसलालाई अन्यथा भएको र त्यसबाट मुद्दाको परिणाममा फरक पर्ने नदेखिएबाट वादी दावीभन्दा बढी कुरामा फैसला गरेको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायण रेग्मी

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १० गते रोज ३ शुभम् ।

- यसै लगाउको २०६१ सालको दे.पु.नं. ८६३३, लिखत बदर, मुन्नु नाउ समेत वि. खलिल दर्जी समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

४.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३२४९, कीर्ते जालसाजी, मुन्नु नाउ समेत वि. खलिल दर्जी समेत

आफ्नो हक नै नभएको वादीहरूको हक भोगको जग्गालाई आफ्नो भनी प्रतिवादीहरूले मिति २०५६।०।६ मा वकसपत्र लिनुदिनु गरेको कार्यले प्रत्यर्थी वादीहरूको हकमा प्रतिकूल असर परेको प्रष्ट रूपमा देखिन आएकोले जालसाज गरेको होइन भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकीरसँग सहमत हुन नसकिने ।

इजलास अधिकृत : नारायण रेग्मी

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १० गते रोज ३ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६० सालको स.फौ.पु.नं. ३१६५, बैंक ठगी, नेपाल सरकार वि. रवीकृष्ण जोशी समेत

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौलाको राय:

हदम्यादसम्बन्धी कानून कार्यविधि कानून भएको र त्यस्तो कानूनले व्यक्ति संस्था वा सरकारको अधिकारको सिर्जना, विवादको सिर्जना र परिभाषा नगरी मुद्दा दायर गर्ने समयावधि किटान गर्दछ । समय किटान गर्दा कार्यविधि कानूनको पश्चातदर्शी असर हुन सक्दछ । तर कार्यविधि कानूनले कुनै नियमले कुनै पक्षको निहित अधिकारमा असर गर्दछ भने त्यस्तो नियमको पश्चातदर्शी असर हुनु हुँदैन भन्ने अनुमान गरिएको हुन्छ । (A Statute Which Takes Away Affects Vested Right of Imposes a New Liability of Confer a New Right Must Be Presumed not to have Retrospective

Operation) संशोधित कार्यविधि कानूनले व्यक्तिका हक अधिकार र सजायमा कुनै असर गरेको छैन भने सो अवस्थामा मात्र कार्यविधि कानूनको पश्चात्दर्शी असर गरी प्रयोग गर्न सकिने हो । तर वारदात हुँदाका अवस्थामा बहाल रहेको कार्यविधिसम्बन्धी कानून लागू नगरी सो समय व्यतीत भएपछि संशोधन व्यवस्थालाई अंगाली त्यस्तो कानूनको सहारामा सजायको माग दावी लिइन्छ र सो दावीअनुसार सजाय गरिन्छ भने पश्चात्दर्शी हुन जान्छ । कानूनको प्रयोग गर्दा पक्षलाई बढी सजाय र हित प्रतिकूल हुने गरी वारदात हुँदा बहाल रहेको कानून प्रयोग नगरी पछि बनेको वा संशोधित कानून प्रावधानका आधारमा सजाय गर्न मिल्दैन । यदि सजाय गरिन्छ भने सो पश्चात्दर्शी हुने ।

मा.न्या.श्री सुशीला कार्कीको राय:

तत्कालीन ठगीको महलको ८ नं. मा २०४३।७।२४ मा संशोधन हुनुपूर्व कायम रहेको वारदात मिति २०४३।३।२ ले दई वर्ष हदम्याद रहेकै बखत थाहा पाई सो म्याद भित्र उजुरी पर्न आएको हुँदा तत्कालीन तथा संशोधन दफाले समेत हदम्याद नाघेको भन्न मिल्ने । २०४३।३।२ सम्म ठगीको वारदात भएको र अभियोग दायर गर्दा थाहा भएको १ वर्षभित्र नालिस दिनुपर्ने भन्ने कार्यविधि कानूनको पालना गरी अभियोग दायर भएको देखिँदा वारदातपश्चात् ठगीको ८ नं. मा संशोधन भएकोले सो हदम्याद प्रस्तुत मुद्दामा लागू हुँदैन भन्न नमिल्ने ।

माननीय न्यायाधीश श्री मोहनप्रकाश सिटौलाको रायसँग सहमत हुन नसकेको हुँदा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ३(१)(क) बमोजिम पूर्ण इजलासमा पेश हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल
इति संवत् २०६६ साल मङ्सिर २१ गते रोज १ शुभम् ।

एकल इजलास

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६६ -WO-००३५,
बन्दीप्रत्यक्षीकरण, दावा दोर्जे शेर्पा समेत वि.
जिल्ला प्रहरी कार्यालय कापा समेत

कानूनको अख्तियारीवेगर थुनामा राखेमा, कानूनको गलत व्याख्या र प्रयोग गरी थुनामा राखेमा र वाध्यात्मक रूपमा पालन गर्नुपर्ने कानूनी प्रक्रिया अवलम्बन नगरी थुनामा राखिएको छ भने सो अवस्थामा गरिएको कार्यको न्यायिक परीक्षण रिट क्षेत्रबाट गर्न मिल्दछ । तर साधिकार अधिकारीले कानूनबमोजिम फैसला गरी कसूरदार ठहर गरेको र सो फैसला कार्यान्वयनको लागि कैदीपूर्जी समेत दिई कैद असूल गर्न कारागारमा पठाएको न्यायिक कार्यलाई असर पर्ने गरी त्यस्तो विषयवस्तुभित्र प्रवेश गरी रिट क्षेत्रबाट हेर्न नमिल्ने ।

साधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत आफ्नो अनुकूल फैसला नभएको आधारमा अधिकारक्षेत्र अन्तर्गतको सुविधा प्राप्त गर्न सक्ने संवैधानिक व्यवस्था हो भनी व्याख्या गर्न समेत उपयुक्त देखिएन । कसूर नगरेको र अभियोग दावीबाट सफाई पाउनु पर्ने भए शुरु जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलाउपर सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २६ बमोजिम कानूनको म्यादभित्र सम्बन्धित पुनरावेदन अदालतमा पुनरावेदन गर्न पाउने निवेदकहरूको कानूनी हक सुरक्षित रहेको अवस्थामा कानूनले प्रदान गरेको पुनरावेदन गर्न पाउने मार्ग समेत अवलम्बन नगरी असाधारण क्षेत्राधिकारको अनुशरण गरेको अवस्थामा बन्दीप्रत्यक्षीकरणबाट सहयोग प्रदान गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल
इति संवत् २०६६ साल पुस २२ गते रोज ४ शुभम् ।